

नासरत का यीशु

# Jesus Of Nazareth

“A Teacher Who Has Come From God”

Randolph Dunn

## Jesus of Nazareth

“A man who has come from God”

### Prophecies and Eye Witnesses

#### Lesson 1

There are over sixty (60) Old Testament prophecies about Jesus all of which were fulfilled. These prophecies covered the entire period of the Old Testament beginning in Genesis and ended in Malachi. The chances of twenty-five of these occurring exceed 1 in one thousand trillion.

There are many prophecies concerning Jesus in the Old Testament but what were the possibilities of making just 25 predictions about someone who was to be born many years later and having these predictions come true?

Dr. Hawley O. Taylor has provided this answer: "Regarding these n cases of events foretold for Israel's Messiah who was to come, if the chances of success were even in the case of each one, that is p (probability) equals  $1/2^n$  in every case, then the overall probability that all n events would find their fulfillment in one person would be  $p^n$  equals  $(1/2)^n$ . Thus there would be but one chance in  $2^n$  (33 million, where n equals 25) of all these foretold events coming true if they were mere guesses. Now a glance at these prophecies concerning Christ reveals that they do not all have an even chance of success, for in some instances it is highly improbable that the event could occur at all (as for a child to be born without a human father). A very conservative compromise would be p equals  $1/5$ ; and the overall probability for the n prophecies coming true would be  $pn$  equals  $(1/5)^n$  or one chance out of a thousand trillion if n equals 25. (Modern Science and Christian Faith, p. 178) Even if the prophecy regarding the virgin birth be excluded, the number remains astronomically large. Too large to assume that this accidentally happened! Twenty-five prophecies concerning Christ and their fulfillment, from Modern Science and Christian Faith, pp. 179-183. Obviously, fulfilled prophecies validate the prophecy.

Jesus came to fulfill the law and the prophets. The Old Testament recorded the prophecy and the writers of the New Testament clearly show their fulfillment. This is only one of the proofs that Jesus was who He claimed to be, God in the form of Jesus of Nazareth.

#### Jesus

“The Father who sent me has himself testified

## नासरत का यीशु

"एक आदमी जो भगवान से आया है"

### भविष्यवाणियाँ और चश्मदीद गवाह

#### पाठ 1

यीशु के बारे में साठ से अधिक (60) पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ हैं, जिनमें से सभी पूरी हुईं। इन भविष्यवाणियों ने उत्पत्ति से शुरू होकर पुराने नियम की पूरी अवधि को कवर किया और मलाकी में समाप्त हुईं। इनमें से पच्चीस होने की संभावना एक हजार ट्रिलियन में 1 से अधिक होती है।

पुराने नियम में यीशु के बारे में कई भविष्यवाणियाँ हैं, लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सिर्फ 25 भविष्यवाणियाँ करने की क्या संभावनाएँ थीं जो कई वर्षों बाद पैदा होने वाले थे और इन भविष्यवाणियों के सच होने की क्या संभावनाएँ थीं?

और n भविष्यवाणियों के सच होने की समग्र संभावना  $p^n$  बराबर  $(1/5)^n$  या एक हजार ट्रिलियन में से एक मौका होगा यदि n 25 के बराबर है। (आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म, पृष्ठ 178) भले ही भविष्यवाणी के बारे में कुंवारी जन्म को बाहर रखा जाए, तो संख्या खगोलीय रूप से बड़ी रहती है। यह मान लेना बहुत बड़ा है कि यह गलती से हुआ! पच्चीस भविष्यवाणियाँ मसीह और उनकी पूर्ति से संबंधित, आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म से, पीपी। 179-183। जाहिर है, पूरी हुई भविष्यवाणियाँ भविष्यवाणी की पुष्टि करती हैं। पच्चीस भविष्यवाणियाँ मसीह और उनकी पूर्ति से संबंधित, आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म से, पीपी। 179-183। जाहिर है, पूरी हुई भविष्यवाणियाँ भविष्यवाणी की पुष्टि करती हैं। पच्चीस भविष्यवाणियाँ मसीह और उनकी पूर्ति से संबंधित, आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म से, पीपी। 179-183। जाहिर है, पूरी हुई भविष्यवाणियाँ भविष्यवाणी की पुष्टि करती हैं।

यीशु व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को पूरा करने आया था। पुराने नियम ने भविष्यवाणी को दर्ज किया और नए नियम के लेखक स्पष्ट रूप से अपनी पूर्ति दिखाते हैं। यह केवल एक प्रमाण है कि यीशु वह था जिसे उसने नासरत के यीशु के रूप में परमेश्वर होने का दावा किया था।

#### यीशु

“मेरे भेजेनेवाले पिता ने आप ही मेरे विषय में गवाही दी है। तू ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा, और न उसका वचन तुम में बसता है, क्योंकि उसके भेजे हुए की प्रतीति नहीं करते। तुम लगन से शास्त्रों का अध्ययन करते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनके द्वारा तुम्हें अनन्त जीवन मिलता है। ये शास्त्र [पुराना नियम] हैं जो मेरे बारे में गवाही देते हैं” (यूहन्ना 5:37-39)।

concerning me. You have never heard his voice nor seen his form, nor does his word dwell in you, for you do not believe the one he sent. You diligently study the Scriptures because you think that by them you possess eternal life. These are the Scriptures [Old Testament] that testify about me” (John 5:37-39).

#### The Apostle Peter

Christians wear the name of Christ because Christ is their Lord, Teacher, Guide, Savior, Redeemer, Model, High Priest, Hope, Sacrifice for sin and much, much more. The rock-solid foundation for our faith is the truth of Peter’s confession - “You are the Christ, the Son of the living God” (Matthew 16:16). Jesus is real and the Bible is true. All that needs to be known about Jesus is found in the Bible. All of human history revolves around Him. Jesus is the central character of the human drama. It is not surprising that the history of the world is divided into two spans of time: before Christ (B.C.) and after Christ (A.D.).

#### The Apostle John

“In the beginning was the Word, and the Word was with God, and the Word was God. He was with God in the beginning. Through him all things were made; without him nothing was made that has been made. In him was life, and that life was the light of men. The light shines in the darkness, but the darkness has not understood it. There came a man who was sent from God; his name was John. He came as a witness to testify concerning that light, so that through him all men might believe. He himself was not the light; he came only as a witness to the light. The true light that gives light to every man was coming into the world. He was in the world, and though the world was made through him, the world did not recognize him. He came to that which was his own, but his own did not receive him. Yet to all who received him, to those who believed in his name, he gave the right to become children of God - children born not of natural descent, nor of human decision or a husband’s will, but born of God” (John 1:1-13).

“The Word became flesh and made his dwelling among us. We have seen his glory, the glory of the One and Only, who came from the Father, full of grace and truth” (John 1:14).

#### John the Baptizer

“He [John] cries out, saying, ‘This was he of

#### प्रेरित पतरस

ईसाई क्राइस्ट का नाम इसलिए पहनते हैं क्योंकि क्राइस्ट उनके भगवान, शिक्षक, मार्गदर्शक, उद्धारकर्ता, मुक्तिदाता, आदर्श, महायाजक, आशा, पाप के लिए बलिदान और बहुत कुछ है। हमारे विश्वास के लिए चट्टान-ठोस नींव पतरस के स्वीकारोक्ति की सच्चाई है - "तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मती 16:16)। यीशु वास्तविक है और बाइबिल सत्य है। यीशु के बारे में जानने के लिए वह सब कुछ है जो बाइबल में पाया जाता है। मनुष्य का सारा इतिहास उसी के इर्द-गिर्द घूमता है। यीशु मानव नाटक का केंद्रीय पात्र है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि दुनिया का इतिहास दो कालखंडों में विभाजित है: ईसा से पहले (ईसा पूर्व) और ईसा के बाद (ई.)

#### प्रेरित जॉन

“आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह शुरुआत में परमेश्वर के साथ था। उसके बिना कुछ भी नहीं बन सकता; उसके बिना कुछ भी नहीं बनाया गया था जो बनाया गया है। उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों का प्रकाश था। अँधेरे में उजाला चमकता है, लेकिन अँधेरे ने उसे समझा नहीं। एक मनुष्य आया जो परमेश्वर की ओर से भेजा गया था; उसका नाम जॉन था। वह उस ज्योति के विषय में साक्षी देने आया, कि उसके द्वारा सब लोग विश्वास करें। वह स्वयं प्रकाश नहीं था; वह केवल प्रकाश के साक्षी के रूप में आया था। प्रत्येक मनुष्य को प्रकाश देने वाला सच्चा प्रकाश संसार में आने वाला था। वह संसार में था, और यद्यपि संसार उसके द्वारा बनाया गया था, संसार ने उसे नहीं पहचाना। वह उसके पास आया जो उसका था, परन्तु अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। तौभी जितनों ने उसे ग्रहण किया, वरन उसके नाम पर विश्वास करनेवालों को,

“वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच अपना निवास स्थान बना लिया। हम ने उसकी महिमा, अर्थात् उस एकलौते की महिमा देखी है, जो पिता की ओर से अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण हुई है” (यूहन्ना 1:14)।

#### यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला

"वह [यूहन्ना] चिल्लाकर कहता है, 'यह वही है जिसके विषय में मैं ने कहा था, कि जो मेरे बाद आता है वह मुझ से बढ़कर है, क्योंकि वह मुझ से पहिले था।' उनकी कृपा की परिपूर्णता से हम सभी को एक के बाद एक आशीर्वाद मिला है। क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई थी; अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा आई। किसी ने कभी परमेश्वर को नहीं देखा, परन्तु एक ही परमेश्वर ने, जो पिता के पास है, उसे प्रगट किया है" (यूहन्ना 1:15-18)।

“यीशु ने स्वर्ग की ओर दृष्टि करके प्रार्थना कीपिताजी, समय आ गया है। अपने पुत्र की महिमा करो, कि तुम्हारा पुत्र तुम्हारी महिमा करे। क्योंकि तू ने

whom I said, He who comes after me has surpassed me because he was before me.' From the fullness of his grace we have all received one blessing after another. For the law was given through Moses; grace and truth came through Jesus Christ. No one has ever seen God, but God the One and Only, who is at the Father's side, has made him known" (John 1:15-18).

"Jesus looked toward heaven and prayed Father, the time has come. Glorify your Son, that your Son may glorify you. For you granted Him authority over all people that he might give eternal life to all those you have given him. Now this is eternal life: that they may know you, the only true God, and Jesus Christ, whom you have sent. I have brought you glory on earth by completing the work you gave me to do. And now, Father, glorify me in your presence with the glory I had with you before the world began" (John 17:1-5).

#### Pilate, The Roman Governor

"Pilate then went back inside the palace, summoned Jesus and asked him, 'Are you the king of the Jews?' 'Is that your own idea,' Jesus asked, 'or did others talk to you about me?'" "Am I a Jew?" Pilate replied. 'It was your people and your chief priests who handed you over to me. What is it you have done?' Jesus said, 'My kingdom is not of this world. If it were, my servants would fight to prevent my arrest by the Jews. But now my kingdom is from another place.' 'You are a king, then!' said Pilate. Jesus answered, 'You are right in saying I am a king. In fact, for this reason I was born, and for this I came into the world, to testify to the truth. Everyone on the side of truth listens to me.' 'What is truth?'" "Pilate asked" (John 18:33-38).

#### Jews

"We have a law, and according to that law he must die, because he claimed to be the Son of God. When Pilate heard this, he was even more afraid, and he went back inside the palace. 'Where do you come from?' he asked Jesus, but Jesus gave him no answer. 'Do you refuse to speak to me?' Pilate said. 'Don't you realize I have power either to free you or to crucify you?' Jesus answered, 'You would have no power over me if it were not given to you from above. Therefore, the one who handed me over to you is guilty of a greater sin'" (John 19:7-11).

#### The eunuch from Ethiopia

उसे सब लोगों पर अधिकार दिया, कि वह उन सभी को अनन्त जीवन दे, जिन्हें तू ने उसे दिया है। अब यह अनन्त जीवन है: कि वे तुम्हें, एकमात्र सच्चे परमेश्वर, और यीशु मसीह, जिसे तुमने भेजा है, जान सकते हैं। जो काम तू ने मुझे करने को दिया है, उसे पूरा करके मैं ने तुझे पृथ्वी पर महिमा दी है। और अब हे पिता, अपने साम्हने मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के आरम्भ से पहिले मेरी तेरे साथ थी" (यूहन्ना 17:1-5)।

#### पिलातुस, रोमन गवर्नर

"तब पीलातुस वापस महल में गया, और यीशु को बुलवाकर पूछा, 'क्या तू यहूदियों का राजा है?' 'क्या यह आपका अपना विचार है,' यीशु ने पूछा, 'या दूसरों ने आपसे मेरे बारे में बात की?' 'क्या मैं एक यहूदी हूँ?' पिलातुस ने उत्तर दिया। 'तेरी प्रजा और महायाजकों ने ही तुझे मेरे वश में कर दिया। तुमने क्या किया है?' यीशु ने कहा, 'मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो मेरे सेवक यहूदियों द्वारा मेरी गिरफ्तारी को रोकने के लिए संघर्ष करते। लेकिन अब मेरा राज्य दूसरी जगह से है।' 'तो फिर तुम एक राजा हो!' पिलातुस ने कहा। यीशु ने उत्तर दिया, 'तुम ठीक कह रहे हो कि मैं एक राजा हूँ। वास्तव में मेरा जन्म इसी कारण से हुआ है, और मैं जगत में इसलिये आया हूँ, कि सत्य की गवाही दूँ। सच्चाई के पक्ष में हर कोई मेरी बात सुनता है।' 'सत्य क्या है?'" "पीलातुस ने पूछा" (यूहन्ना 18:33-38)।

#### यहूदियों

"हमारे पास एक कानून है, और उस कानून के अनुसार उसे मरना चाहिए, क्योंकि उसने भगवान का पुत्र होने का दावा किया था। जब पीलातुस ने यह सुना, तो वह और भी अधिक डर गया, और वापस महल के भीतर चला गया। 'आप कहां से हैं?' उसने यीशु से पूछा, परन्तु यीशु ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। 'क्या तुम मुझसे बात करने से इनकार करते हो?' पिलातुस ने कहा। 'क्या तुम नहीं जानते कि मेरे पास तुम्हें मुक्त करने या तुम्हें सूली पर चढ़ाने की शक्ति है?' यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि तुम्हें ऊपर से न दिया जाता तो तुम मुझ पर कोई अधिकार नहीं रखते। इसलिये जिस ने मुझे तुम्हारे वश में किया है वह और भी बड़े पाप का दोषी है'" (यूहन्ना 19:7-11)।

#### इथियोपिया का हिजड़ा

"और उस ने उत्तर देकर कहा, 'मैं विश्वास करता हूँ, कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है'" (प्रेरितों के काम 8:37)।

सारांशये और कई अन्य मार्ग स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि यीशु:

- वह ईश्वर था जिसके द्वारा सब कुछ बनाया गया था
- मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने के लिए खुद को दीन किया
- पाप के लिए सिद्ध बलिदान बन गया।

“And he answered and said, ‘I believe that Jesus Christ is the Son of God’” (Acts 8:37).

### Summary

These and many other passages clearly show that Jesus:

- a) was God through whom everything was created
- b) humbled Himself to come to earth in the form of a man
- c) became the perfect sacrifice for sin.

“All this was done that anyone who received him, those who believed in his name, **he gave the right** to become children of God - children born not of natural descent, nor of human decision or a husband's will, but born of God” (John 1:12-13).

### Questions

1. Prophecies being fulfilled within a very few years in one person by many different prophets over hundreds of years earlier is:
  - a. \_\_\_ Inconceivable
  - b. \_\_\_ Unreliable
  - c. \_\_\_ Validates the prophecy
2. New Testament eyewitnesses had little to say about Jesus being the Son of God.  
T. \_\_\_ F. \_\_\_
3. Only Peter publicly acknowledged that Jesus was the Son of God.  
T. \_\_\_ F. \_\_\_
4. Why was all authority given to Jesus by God?
  - a. \_\_\_ To fulfill all righteousness
  - b. \_\_\_ Give eternal life to those who obey His commands
  - c. \_\_\_ Allow Him to live a sinless life
5. Which of the following are statements about Jesus are correct?
  - a. \_\_\_ Everything was made by Jesus, God, the Son
  - b. \_\_\_ Jesus humbled himself to come to earth as human
  - c. \_\_\_ Jesus became the perfect sacrifice for sin
  - d. \_\_\_ All the above
  - e. \_\_\_ a and c

### What Secular Writers Say About Jesus

#### Lesson 2

Even though the Bible statements are proof that Jesus was a real person, there is also considerable evidence outside the Bible

"यह सब इसलिए किया गया कि जिसने भी उसे ग्रहण किया, उसके नाम पर विश्वास करने वालों को ईश्वर की संतान होने का अधिकार दिया - नैसर्गिक वंश से पैदा हुए बच्चे, न मानव निर्णय या पति की इच्छा से, बल्कि ईश्वर से पैदा हुए" (यूहन्ना 1:12-13)।

### प्रश्न

1. सैकड़ों साल पहले कई अलग-अलग भविष्यवक्ताओं द्वारा एक व्यक्ति में बहुत कम वर्षों में पूरी की जा रही भविष्यवाणियां हैं:  
एक। \_\_\_ अकल्पनीय  
बी। \_\_\_ अविश्वसनीय  
सी। \_\_\_ भविष्यवाणी की पुष्टि करता है
2. नए नियम के प्रत्यक्षदर्शियों के पास यीशु के परमेश्वर के पुत्र होने के बारे में कहने के लिए बहुत कम था।  
टी. \_\_\_ एफ. \_\_\_
3. केवल पतरस ने सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था।  
टी. \_\_\_ एफ. \_\_\_
4. यीशु को सारा अधिकार परमेश्वर ने क्यों दिया?  
एक। \_\_\_ सभी धार्मिकता को पूरा करने के लिए  
बी। \_\_\_ उन लोगों को अनन्त जीवन दें जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं  
सी। \_\_\_ उसे एक पापरहित जीवन जीने दें
5. यीशु के बारे में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?  
एक। \_\_\_ सब कुछ यीशु, भगवान, पुत्र द्वारा बनाया गया था  
बी। \_\_\_ यीशु ने मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने के लिए स्वयं को दीन किया  
सी। \_\_\_ यीशु पाप के लिए सिद्ध बलिदान बन गया  
डी। \_\_\_ सब से ऊपर  
इ। \_\_\_ ए और सी

### धर्मनिरपेक्ष लेखक यीशु के बारे में क्या कहते हैं

#### पाठ 2

हालाँकि बाइबल के कथन इस बात का प्रमाण हैं कि यीशु एक वास्तविक व्यक्ति थे, बाइबल के बाहर भी इस बात की पुष्टि करने वाले काफी प्रमाण हैं कि यीशु एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे, जैसे कि बाइबल उन्हें प्रस्तुत करती है। कुछ प्राचीन गैर-ईसाई इतिहासकारों के निम्नलिखित बाहरी लेखन यीशु के बारे में बाइबल के बयानों का सहयोग करते हैं:

confirming that Jesus was an historical person, just as the Bible presents him. The following external writings by some ancient non-Christian historians collaborate Bible statements about Jesus:

Matthew states "They had crucified him ... and sitting down, they kept watch over him there ... from the sixth hour until the ninth hour darkness came over all the land" (Matthew 27:35-36; 45-46). Mark put it this way "At the sixth hour darkness came over the whole land until the ninth hour" (Mark 15:33).

#### Thallus

Thallus, a Samaritan-born historian who lived and worked in Rome about A.D. 52, quoted by Julius Africanus, a Christian chronographer of the late second century.<sup>1</sup> "Thallus, in the third book of his histories, explains away this darkness as an eclipse of the sun." Africanus stated his objection to the report arguing that an eclipse of the sun cannot occur during the full moon, as was the case when Jesus died at Passover time. The force of the reference to Thallus is that the circumstances of Jesus' death were known and discussed in the Imperial City as early as the middle of the first century. The fact of Jesus' crucifixion must have been fairly well known by that time, to the extent that unbelievers like Thallus thought it necessary to explain the matter of the darkness as a natural phenomenon. ... Ironically, Thallus' efforts have been turned into the mainstream of historical proof for Jesus and for the reliability of Mark's account of the darkness at his death."<sup>2</sup>

#### Mara Bar-Serapion

"A manuscript in the British Museum preserves the text of a letter sent to his son by a Syrian named Mara Bar-Serapion. The father illustrated the folly of persecuting wise men like Socrates, Pythagoras, and the wise king of the Jews, which the context obviously shows to be Jesus. "What advantage did the Athenians gain from putting Socrates to death? Famine and plague came upon them as a judgment for their crime. What advantage did the men of Samos gain from burning Pythagoras? In a moment their land was covered with sand. What advantage did the Jews gain from executing their king? It was just after that that their kingdom was abolished. God justly avenged these three wise men: the Athenians died of hunger; the Samians were overwhelmed by the seas; the Jews, ruined and driven from their

मती कहता है, "उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था ... और बैठे हुए, वे वहां उस पर पहरा देते रहे ... छठे घंटे से लेकर नौवें घंटे तक सारे देश में अन्धकार छा गया" (मती 27:35-36; 45-46)। मरकुस ने इसे इस तरह से कहा, "छठे घंटे तक नवें घंटे तक सारे देश में अन्धकार छा गया" (मरकुस 15:33)।

#### थैलस

थैलस, सामरी में जन्मे इतिहासकार, जो 52 ईस्वी सन् के आसपास रोम में रहते थे और काम करते थे, जूलियस अफ्रीकनस, जो कि दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध के एक ईसाई क्रोनोग्राफर थे, ने उद्धृत किया। 1 "थैलस, अपने इतिहास की तीसरी पुस्तक में, इस अंधेरे को एक ग्रहण के रूप में समझाता है। सूरज की।" अफ्रीकनस ने रिपोर्ट पर अपनी आपत्ति जताते हुए कहा कि पूर्णिमा के दौरान सूर्य का ग्रहण नहीं हो सकता है, जैसा कि फसह के समय यीशु की मृत्यु के समय हुआ था। थैलस के संदर्भ का बल यह है कि यीशु की मृत्यु की परिस्थितियों को पहली शताब्दी के मध्य में इंपीरियल सिटी में जाना जाता था और चर्चा की जाती थी। यीशु के सूली पर चढ़ाए जाने का तथ्य उस समय तक काफी अच्छी तरह से ज्ञात हो गया होगा, इस हद तक कि थैलस जैसे अविश्वासियों ने अंधेरे के मामले को एक प्राकृतिक घटना के रूप में समझाना आवश्यक समझा। ... विडंबना यह है कि थैलस'

#### मारा बार-सेरापियन

"ब्रिटिश संग्रहालय में एक पांडुलिपि मारा बार-सेरापियन नामक एक सीरियाई द्वारा अपने बेटे को भेजे गए एक पत्र के पाठ को संरक्षित करती है। पिता ने सुकरात, पाइथागोरस, और यहूदियों के बुद्धिमान राजा जैसे बुद्धिमान पुरुषों को सताने की मूर्खता का चित्रण किया, जिसे संदर्भ स्पष्ट रूप से यीशु के रूप में दर्शाता है। "सुकरात को मौत के घाट उतारने से एथेनियाई लोगों को क्या फायदा हुआ? अकाल और प्लेग उनके अपराध के लिए एक फैसले के रूप में आया। पाइथागोरस को जलाने से समोस के लोगों को क्या फायदा हुआ? एक पल में उनकी भूमि रेत से ढक गई। क्या फायदा क्या यहूदियों को अपने राजा को मारने से लाभ हुआ? इसके ठीक बाद उनके राज्य को समाप्त कर दिया गया था। परमेश्वर ने इन तीन बुद्धिमानों का न्यायोचित प्रतिशोध लिया: एथेनियाई लोग भूख से मर गए; सैमियन समुद्र से डूब गए; यहूदी, बर्बाद हो गए और अपने से खदेड़ दिए गए भूमि, पूर्ण फैलाव में रहते हैं। ... और न ही बुद्धिमान राजा भलाई के लिए मरा; वह उस शिक्षा में जीवित रहा जो उसने दी थी"।<sup>3</sup>

#### कुरनेलियुस टैसिटस

लगभग 50 ईस्वी से 100 ईस्वी तक रहने वाले एक रोमन इतिहासकार ने नीरो की आग के बारे में लिखा। "नतीजतन, रिपोर्ट से छुटकारा पाने के लिए, नीरो ने अपराध बोध को तेज कर दिया और अपने घृणित कार्यों के लिए नफरत

land, live in complete dispersion. ... Nor did the wise King die for good; he lived on in the teaching which He had given".<sup>3</sup>

#### Cornelius Tacitus

A Roman historian living from about A.D. 50 to A.D. 100 wrote regarding Nero's fire. "Consequently, to get rid of the report, Nero fastened the guilt and inflicted the most exquisite tortures on a class hated for their abominations, called Christians by the populace. Christus, from whom the name had its origin, suffered the extreme penalty during the reign of Tiberius at the hands of one of our procurators, Pontius Pilatus".<sup>4</sup>

#### Plinius Secundus

A Roman governor in A.D. 112 wrote Emperor Trajan "They were in the habit of meeting on a certain fixed day before it was light, when they sang an anthem to Christ as God, and bound themselves by a solemn oath not to commit any wicked deed ... after which it was their custom to separate, and then meet again to partake of food, but food of an ordinary kind".<sup>5</sup>

#### Seutonius

An annalist and court official of the Imperial House during the reign of Hadrian wrote about A.D. 120 in the Life of Claudius. "As the Jews were making constant disturbances at the instigation of Chrestus, he (Claudius) expelled them from Rome."<sup>6</sup> Edward C. Wharton then states "The reason for the fame of this quotation is due to the fact that Luke, some sixty years earlier, had recorded this same incident as the reason for the apostle Paul yoking up with a Christian Jewish couple named Aquila and Priscilla (Acts 18:1-2). Again, the mention of Christ in the historical context is observed in extra-biblical literature."<sup>7</sup>

#### Flavius Josephus

Josephus has an interesting observation. "There arose about this time Jesus, a wise man, if indeed we should call him a man; for he was a doer of marvelous deeds, a teacher of men who receive the truth with pleasure. He won over many Jews and also many Greeks. This man was the Messiah. And when Pilate had condemned him to the cross at the instigation of our own leaders, those who had loved him from the first did not cease. For he appeared to them on the third day alive again, as the prophets had predicted and said many other wonderful things about him. And even now the race of Christians, so named after him, has not yet died out."<sup>8</sup>

करने वाले वर्ग पर सबसे उत्तम यातनाएं दीं, जिन्हें आबादी द्वारा ईसाई कहा जाता था। क्राइस्टस, जिनसे नाम की उत्पत्ति हुई थी, को इस दौरान अत्यधिक दंड का सामना करना पड़ा। हमारे एक खरीददार, पॉटियस पिलातुस के हाथों तिबेरियस का शासन।<sup>4</sup>

#### प्लिनियस सेकेंडस

112 ईस्वी में एक रोमन गवर्नर ने सम्राट ट्राजन को लिखा "वे प्रकाश होने से पहले एक निश्चित निश्चित दिन पर मिलने की आदत में थे, जब उन्होंने मसीह को भगवान के रूप में एक गान गाया, और खुद को एक गंभीर शपथ से बंधे थे कि कोई भी दुष्ट काम न करें ... जिसके बाद उनका अलग होना, और फिर भोजन करने के लिए फिर से मिलना, लेकिन एक सामान्य प्रकार का भोजन करना उनका रिवाज था।"<sup>5</sup>

#### सेटोनियस

हैड्रियन के शासनकाल के दौरान इंपीरियल हाउस के एक एनालिस्ट और कोर्ट अधिकारी ने लाइफ ऑफ क्लॉडियस में लगभग 120 ईस्वी सन् में लिखा था। "चूंकि चेस्टस के उकसाने पर यहूदी लगातार गड़बड़ी कर रहे थे, उसने (क्लॉडियस) उन्हें रोम से निष्कासित कर दिया।" 6 एडवर्ड सी। व्हार्टन फिर कहते हैं, "इस उद्धरण की प्रसिद्धि का कारण इस तथ्य के कारण है कि ल्यूक, लगभग साठ वर्षों पहले, इसी घटना को प्रेरित पौलुस ने अक्विला और प्रिस्किल्ला नामक एक ईसाई यहूदी जोड़े के साथ जुड़ने के कारण के रूप में दर्ज किया था (प्रेरितों के काम 18:1-2)। फिर से, ऐतिहासिक संदर्भ में मसीह का उल्लेख अतिरिक्त में देखा गया है- बाइबिल साहित्य।"<sup>7</sup>

#### फ्लेवियस जोसेफस

जोसेफस का एक दिलचस्प अवलोकन है। "इस समय के बारे में एक बुद्धिमान व्यक्ति यीशु, यदि हम वास्तव में उसे एक आदमी कहते हैं, क्योंकि वह अद्भुत काम करता था, पुरुषों का शिक्षक था जो खुशी से सच्चाई को स्वीकार करता था। उसने कई यहूदियों और कई यूनानियों पर जीत हासिल की। जब पीलातुस ने हमारे अपने अगुवों के कहने पर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया, तो जो पहिले से उस से प्रेम रखते थे, वे न रुके, क्योंकि वह तीसरे दिन उन्हें फिर जीवित दिखाई दिया, जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यदवाणी की और उसके विषय में और भी बहुत सी अद्भुत बातें कहीं, और अब भी मसीहियों की वह जाति जो उसके नाम पर रखी गई है, अभी तक समाप्त नहीं हुई है।"<sup>8</sup>

#### प्रारंभिक यहूदी और अन्यजाति लेखक

एफएफ ब्रूस का निम्नलिखित उद्धरण इसे बहुत स्पष्ट रूप से सारांशित करता है। "शुरुआती यहूदी और अन्यजातियों के लेखकों के साक्ष्य के बारे में और जो कुछ भी सोचा जा सकता है ... यह कम से कम उन लोगों के लिए स्थापित करता है, जो ईसाई लेखन की गवाही को अस्वीकार करते हैं, स्वयं

### Early Jewish and Gentile Writers

The following quote from F. F. Bruce summarizes this very clearly. "Whatever else may be thought of the evidence from early Jewish and Gentile writers...it does at least establish, for those who refuse the witness of Christian writings, the historical character of Jesus himself. Some writers may toy with the fancy of a 'Christ-myth,' but they do not do so on the ground of historical evidence. The historicity of Christ is as axiomatic [self-evident rd] for an unbiased historian as the historicity of Julius Caesar. It is not historians who propagate the 'Christ-myth' theories." 9

### Questions

1. Matthews account of Jesus's crucifixion is confirmed by Thallus quoting Julius Africinus.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
  2. A Roman historian Cornelius Tacitus wrote that Christ "suffered the extreme penalty."  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
  3. Non-Christian writers provide evidence external of the Bible confirming the Bible account that a man with unusual powers lived in Galilee/Judea.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
  4. No Roman only Jewish historian supports the Biblical account that Jesus was crucified by Pontius Pilate.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
  5. Josephus observed in his writings that Pilate condemned Jesus to be crucified and that Jesus appeared to His disciples three days later,  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
1. F. F. Buce, The New Testament Documents, Eerdmens, p. 113.
  2. Edward C. Wharton, Christianity: A Clear Case of History Howard p. 7.
  3. British Museum Syriac Mss., F. F. Bruce, Jesus and Christian Origins Outside the New Testament, p. 31.
  4. The Annals and the Histories, 15:44. From Britannica Great Books, Vol. 15, p. 168.
  5. Epistles, 10:96.
  6. Life of Claudius, 25:4
  7. Edward C. Wharton, Christianity: A Clear Case of History, Howard p. 11.
  8. Antiquities, 18,3. 3.
  9. F. F. Bruce, The New Testament Documents. P. 119. All the above were cited by Edward C. Wharton in his book Christianity: A Clear Case of History

यीशु के ऐतिहासिक चरित्र। कुछ लेखक एक की कल्पना के साथ खिलवाड़ कर सकते हैं 'क्राइस्ट-मिथ', लेकिन वे ऐतिहासिक साक्ष्य के आधार पर ऐसा नहीं करते हैं। जूलियस सीज़र की ऐतिहासिकता के रूप में एक निष्पक्ष इतिहासकार के लिए मसीह की ऐतिहासिकता स्वयंसिद्ध [स्व-स्पष्ट rd] है। यह नहीं है इतिहासकार जो 'क्राइस्ट-मिथ' सिद्धांतों का प्रचार करते हैं।" 9

### प्रश्न

1. जूलियस अफ्रिकिनस के हवाले से थैलस ने यीशु के क्रूस पर चढ़ने के मैथ्यूज खाते की पुष्टि की है।  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_
2. एक रोमी इतिहासकार कुरनेलियुस टैसिटस ने लिखा कि मसीह ने "अत्यंत दण्ड भोगा।"  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_
3. गैर-ईसाई लेखक बाइबल के बाहर इस बात का सबूत देते हैं कि बाइबल के वृत्तान्त की पुष्टि करते हुए कि असामान्य शक्तियाँ वाला एक व्यक्ति गलील/यहूदिया में रहता था।  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_
4. कोई रोमन केवल यहूदी इतिहासकार बाइबिल के खाते का समर्थन नहीं करता है कि यीशु को पॉटियस पिलाट द्वारा सूली पर चढ़ाया गया था।  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_
5. जोसीफस ने अपने लेखों में देखा कि पीलातुस ने यीशु को सूली पर चढ़ाए जाने की निंदा की और तीन दिन बाद यीशु अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुआ।  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_

1. एफएफ बुसे, द न्यू टेस्टामेंट डॉक्यूमेंट्स, एर्डमेन्स, पी। 113.
2. एडवर्ड सी. व्हार्टन, ईसाई धर्म: इतिहास का एक स्पष्ट मामला हावर्ड पी। 7.
3. ब्रिटिश म्यूजियम सिरिएक Mss., FF ब्रूस, जीसस एंड क्रिश्चियन ऑरिजिंस आउटसाइड द न्यू टेस्टामेंट, पृ. 31.
4. इतिहास और इतिहास, 15:44। ब्रिटानिका ग्रेट बुक्स से, वॉल्यूम। 15, पृ. 168.
5. पत्र, 10:96।
6. क्लौडियस का जीवन, 25:4
7. एडवर्ड सी. व्हार्टन, ईसाई धर्म: इतिहास का एक स्पष्ट मामला, हावर्ड पी। 11।
8. पुरावशेष, 18,3। 3.
9. एफएफ ब्रूस, द न्यू टेस्टामेंट डॉक्यूमेंट्स। पी. 119. उपरोक्त सभी का उल्लेख एडवर्ड सी. व्हार्टन ने अपनी पुस्तक क्रिश्चियनिटी: ए क्लियर केस ऑफ हिस्ट्री में किया है।

### यीशु का प्रारंभिक जीवन

#### अध्याय 3

भविष्यद्वक्ता यशायाह के माध्यम से परमेश्वर ने कहा, "यहोवा स्वयं तुम्हें एक चिन्ह देगा: कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका

## Jesus' Early Life

### Lesson 3

God through the prophet Isaiah stated "The Lord himself will give you a sign: The virgin will be with child and will give birth to a son, and will call him Immanuel" (Isaiah 7:14).

Then God sent the angel Gabriel to Nazareth, a town in Galilee, to a virgin pledged to be married to a man named Joseph, a descendant of David. The virgin's name was Mary. The angel went to her and said, "Greetings, you who are highly favored! The Lord is with you (Luke 1:26-28).

His mother Mary was pledged to be married to Joseph, but before they came together, she was found to be with child through the Holy Spirit. Because Joseph her husband was a righteous man and did not want to expose her to public disgrace, he had in mind to divorce her quietly. But after he had considered this, an angel of the Lord appeared to him in a dream and said, "Joseph son of David, do not be afraid to take Mary home as your wife, because what is conceived in her is from the Holy Spirit. She will give birth to a son, and you are to give him the name Jesus, because he will save his people from their sins (Matthew 1:18-21).

All this took place to fulfill what the Lord had said through the prophet: "The virgin will be with child and will give birth to a son, and they will call him Immanuel" - which means, God with us (Matthew 1:23).

### Birth

In those days Caesar Augustus issued a decree that a census should be taken of the entire Roman world. (This was the first census that took place while Quirinius was governor of Syria.) And everyone went to his own town to register. So, Joseph also went up from the town of Nazareth in Galilee to Judea, to Bethlehem the town of David, because he belonged to the house and line of David. He went there to register with Mary, who was pledged to be married to him and was expecting a child. While they were there, the time came for the baby to be born, and she gave birth to her firstborn, a son. She wrapped him in cloths and placed him in a manger, because there was no room for them in the inn (Luke 2:1-7).

### Escape To Egypt

नाम इम्मानुएल रखेगी" (यशायाह 7:14)।

तब परमेश्वर ने स्वर्गदूत जिब्राईल को गलील के एक नगर नासरत में एक कुंवारी कन्या के पास भेजा, जो दाऊद के वंशज यूसुफ नाम के एक व्यक्ति से विवाह करने का वचन देती है। कुंवारी का नाम मरियम था। स्वर्गदूत ने उसके पास जाकर कहा, "नमस्कार, हे अति कृपालु! यहोवा तुम्हारे साथ है (लूका 1:26-28)।

उसकी माता मरियम को यूसुफ से विवाह करने का वचन दिया गया था, परन्तु उनके एक साथ आने से पहले, वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भवती पाई गई। क्योंकि यूसुफ उसका पति एक धर्मी व्यक्ति था और वह उसे सार्वजनिक अपमान के लिए बेनकाब नहीं करना चाहता था, उसके मन में उसे चुपचाप तलाक देने का था। परन्तु यह सोचकर, यहोवा का एक दूत उसे स्वप्न में दिखाई दिया, और कहा, दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को अपनी पत्नी के रूप में अपने घर ले जाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है वह पवित्र आत्मा की ओर से है वह एक पुत्र को जनेगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा (मती 1:18-21)।

यह सब उस बात को पूरा करने के लिए हुआ जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के माध्यम से कही थी: "कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसे इम्मानुएल कहेंगे" - जिसका अर्थ है, परमेश्वर हमारे साथ (मती 1:23)

### जन्म

उन दिनों सीज़र ऑगस्टस ने एक फरमान जारी किया कि पूरे रोमन दुनिया की जनगणना की जानी चाहिए। (यह पहली जनगणना थी जो सीरिया के राज्यपाल के समय हुई थी।) और सभी अपने-अपने शहर में पंजीकरण कराने गए। सो यूसुफ भी गलील के नासरत नगर से यहूदिया को गया, और दाऊद के नगर बेतलेहेम को गया, क्योंकि वह दाऊद के घराने और वंश का था। वह वहाँ मरियम के साथ पंजीकरण कराने गया, जिसने उससे शादी करने का वचन दिया था और एक बच्चे की उम्मीद कर रही थी। जब वे वहाँ थे, तब बच्चे के जन्म का समय आया, और उसने अपने पहलौठे पुत्र को जन्म दिया। उसने उसे कपड़े में लपेटा और एक चरनी में रखा, क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह नहीं थी (लूका 2:1-7)।

### मिस्र के लिए पलायन

यहूदिया के बेतलेहेम में यीशु के जन्म के बाद, राजा हेरोदेस के समय में, मागी [बुद्धिमान एनकेजेवी] पूर्व से यरूशलेम आए और पूछा, 'वह कहाँ है जो यहूदियों का राजा पैदा हुआ है? हमने पूर्व में उसका तारा देखा और उसकी पूजा करने आए हैं।' जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह और उसके साथ सारा यरूशलेम व्याकुल हो उठा (मती 2:1-3)।

After Jesus was born in Bethlehem in Judea, during the time of King Herod, Magi [wise men NKJV] from the east came to Jerusalem and asked, 'Where is the one who has been born king of the Jews? We saw his star in the east and have come to worship him.' When King Herod heard this he was disturbed, and all Jerusalem with him (Matthew 2:1-3).

And having been warned in a dream not to go back to Herod, they returned to their country by another route. When they had gone, an angel of the Lord appeared to Joseph in a dream. "Get up," he said, "take the child and his mother and escape to Egypt. Stay there until I tell you, for Herod is going to search for the child to kill him" (Matthew 2:12-13).

#### Returning Home to Nazareth

After Herod died, an angel of the Lord appeared in a dream to Joseph in Egypt and said, "Get up, take the child and his mother and go to the land of Israel, for those who were trying to take the child's life are dead." So he got up, took the child and his mother and went to the land of Israel. But when he heard that Archelaus was reigning in Judea in place of his father Herod, he was afraid to go there. Having been warned in a dream, he withdrew to the district of Galilee, and he went and lived in a town called Nazareth. So was fulfilled what was said through the prophets: "He will be called a Nazarene" (Matthew 2:19-23).

#### Youth

Every year his parents went to Jerusalem for the Feast of the Passover. When he was twelve years old, they went up to the Feast, according to the custom. After the Feast was over, while his parents were returning home, the boy Jesus stayed behind in Jerusalem, but they were unaware of it. Thinking he was in their company, they traveled on for a day. Then they began looking for him among their relatives and friends. When they did not find him, they went back to Jerusalem to look for him. After three days they found him in the temple courts, sitting among the teachers, listening to them and asking them questions. Everyone who heard him was amazed at his understanding and his answers. When his parents saw him, they were astonished. His mother said to him, "Son, why have you treated us like this? Your father and I have been anxiously searching for you". "Why were you searching for me?" he asked. "Didn't you know I had to be in my Father's house

और स्वप्न में चितौनी पाकर हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से अपने देश को लौट गए। जब वे चले गए, तब यहोवा का एक दूत यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया। "उठो," उसने कहा, "बच्चे और उसकी माँ को ले जाओ और मिस्र को भाग जाओ। जब तक मैं तुझ से न कहूँ, तब तक वहीं रहना, क्योंकि हेरोदेस उस बालक को घात करने के लिथे ढूँढने पर है" (मत्ती 2:12-13)।

#### नासरत में घर वापसी

हेरोदेस के मरने के बाद, यहोवा का एक दूत मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया और कहा, "उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल देश में चला जा, क्योंकि जो बालक के प्राण लेने का यत्न करते थे वे मर गए हैं।" सो वह उठा, और बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल देश को चला गया। परन्तु जब उसने सुना कि अर्खिलौस अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर यहूदिया में राज्य कर रहा है, तो वह वहां जाने से डर गया। स्वप्न में चितौनी पाकर वह गलील देश को चला गया, और जाकर नासरत नाम के नगर में रहने लगा। तो वह पूरा हुआ जो भविष्यवक्ताओं के द्वारा कहा गया था: "वह नासरी कहलाएगा" (मत्ती 2:19-23)।

#### युव्ा

हर साल उसके माता-पिता फसह के पर्व के लिए यरुशलेम जाते थे। जब वह बारह वर्ष का हुआ, तब वे रीति के अनुसार पर्व पर गए। पर्व समाप्त होने के बाद, जब उसके माता-पिता घर लौट रहे थे, लड़का यीशु पीछे यरुशलेम में रहा, लेकिन वे इससे अनजान थे। यह सोचकर कि वह उनकी कंपनी में है, उन्होंने एक दिन के लिए यात्रा की। फिर वे उसे अपने सम्बन्धियों और मित्रों के बीच ढूँढने लगे। जब वे उसे न पा सके, तो उसे ढूँढने के लिए यरुशलेम को लौट गए। तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर के आंगनों में शिक्षकों के बीच बैठे, उनकी बातें सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। हर कोई जिसने उसे सुना वह उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित था। जब उसके माता-पिता ने उसे देखा तो वे हैरान रह गए। उसकी माँ ने उससे कहा, "बेटा, तुमने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? मैं और तुम्हारे पिता बड़ी उत्सुकता से तुम्हें ढूँढ रहे हैं।" "तुम मुझे क्यों ढूँढ रहे थे?" उसने पूछा। "क्या आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर [व्यापार NKJV] में रहना है" (लूका 2:41-49)?

तब वह उनके साथ नासरत को गया और उनकी आज्ञा मानता रहा। लेकिन उसकी माँ ने इन सब बातों को अपने दिल में संजो कर रखा था। और यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया (लूका 2:51-52)।

#### प्रश्न

1. मरियम को यूसुफ से शादी करने का वचन दिया गया था, लेकिन उनके एक साथ आने से पहले, वह बच्चे के साथ पाई गई थी।

[business NKJV]" (Luke 2:41-49)?

Then he went down to Nazareth with them and was obedient to them. But his mother treasured all these things in her heart. And Jesus grew in wisdom and stature, and in favor with God and men (Luke 2:51-52).

#### Questions

1. Mary was pledged to be married to Joseph, but before they came together, she was found to be with child.  
T. \_\_\_\_ F. \_\_\_\_
2. Jesus was born in Jerusalem as He was King of the Jews.  
T. \_\_\_\_ F. \_\_\_\_
3. Jesus was of priestly lineage, a Levite.  
T. \_\_\_\_ F. \_\_\_\_
4. Because of Herod, Joseph took Jesus and his mother to Egypt and following Herod's death they returned to Israel.  
T. \_\_\_\_ F. \_\_\_\_
5. At the age of 12 Jesus asked questions of the temple teachers.  
T. \_\_\_\_ F. \_\_\_\_

### Jesus Beginning His Mission

#### Lesson 4

##### Baptism by John the Baptizer

"I baptize with water," John replied, "but among you stands one you do not know. He is the one who comes after me, the thongs of whose sandals I am not worthy to untie This all happened at Bethany on the other side of the Jordan, where John was baptizing. The next day John saw Jesus coming toward him and said, "'Look, the Lamb of God, who takes away the sin of the world! This is the one I meant when I said, 'A man who comes after me has surpassed me because he was before me. I myself did not know him, but the reason I came baptizing with water was that he might be revealed to Israel'" (John 1:26-28).

Then John gave this testimony: "I saw the Spirit come down from heaven as a dove and remain on him. I would not have known him, except that the one who sent me to baptize with water told me, 'The man on whom you see the Spirit come down and remain is he who will baptize with the Holy Spirit.'" I have seen and I testify

टी. \_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_

2. यीशु का जन्म यरूशलेम में हुआ था क्योंकि वह यहूदियों का राजा था।  
टी. \_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_
3. यीशु याजकीय वंश का था, एक लेवी।  
टी. \_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_
4. हेरोदेस के कारण, यूसुफ यीशु और उसकी माँ को मिस्र ले गया और हेरोदेस की मृत्यु के बाद वे इस्राएल लौट आए।  
टी. \_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_
5. 12 साल की उम्र में यीशु ने मंदिर के शिक्षकों से सवाल पूछे।  
टी. \_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_

यीशु अपने मिशन की शुरुआत

#### पाठ 4

##### जॉन द बैप्टाइजर द्वारा बपतिस्मा

"मैं पानी से बपतिस्मा देता हूँ," जॉन ने उत्तर दिया, "लेकिन तुम्हारे बीच एक ऐसा खड़ा है जिसे आप नहीं जानते। वही मेरे पीछे आता है, जिसकी जूतियों के पट खोलने के योग्य मैं नहीं। यह सब यरदन के उस पार बैतनिय्याह में हुआ, जहां यूहन्ना बपतिस्मा दे रहा था। दूसरे दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखा और कहा, "देखो, परमेश्वर का मेम्ना, जो जगत का पाप उठा ले जाता है! मेरे कहने का यही मतलब था जब मैंने कहा, 'मेरे पीछे आने वाला एक आदमी मुझसे आगे निकल गया है क्योंकि वह मुझसे पहले था। मैं तो उसे नहीं जानता था, पर इसलिथे कि मैं जल से बपतिस्मा देने आया हूँ, कि वह इस्राएल पर प्रगट हो जाए" (यूहन्ना 1:26-28)।

तब यूहन्ना ने यह गवाही दी: "मैंने आत्मा को कबूतर की नाईं स्वर्ग से उतरते और उस पर रहते हुए देखा। मैं उसे नहीं जानता, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने के लिये भेजा है, उसने मुझ से कहा, कि जिस मनुष्य पर तुम आत्मा को उतरते और ठहरते देखते हो, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। मैंने देखा है और मैं गवाही देता हूँ कि यह परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 1:26-34)।

##### शैतान द्वारा प्रलोभित

तब यीशु को आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया गया ताकि शैतान की परीक्षा हो। चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, वह भूखा था। परीक्षा देनेवाले ने उसके पास आकर कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह कि ये पत्थर रोटी बन जाएं। यीशु ने उत्तर दिया, "लिखा है: मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित

that this is the Son of God (John 1:26-34).

### Tempted By Satan

Then Jesus was led by the Spirit into the desert to be tempted by the devil. After fasting forty days and forty nights, he was hungry. The tempter came to him and said, "If you are the Son of God, tell these stones to become bread." Jesus answered, "It is written: Man does not live on bread alone, but on every word that comes from the mouth of God." Then the devil took him to the holy city and had him stand on the highest point of the temple. "If you are the Son of God," he said, "throw yourself down. For it is written: He will command his angels concerning you, and they will lift you up in their hands, so that you will not strike your foot against a stone." Jesus answered him "It is also written: Do not put the Lord your God to the test." Again, the devil took him to a very high mountain and showed him all the kingdoms of the world and their splendor. "All this I will give you" he said, "if you will bow down and worship me." Jesus said to him, "Away from me, Satan! For it is written: Worship the Lord your God, and serve him only." Then the devil left him, and angels came and attended him (Matthew 4:1-11).

### His Mission

When the devil had finished all this tempting, he left him until an opportune time. Jesus returned to Galilee in the power of the Spirit, and news about him spread through the whole countryside. He taught in their synagogues, and everyone praised him. He went to Nazareth, where he had been brought up, and on the Sabbath day he went into the synagogue, as was his custom. And he stood up to read. The scroll of the prophet Isaiah was handed to him. Unrolling it, he found the place where it is written: "The Spirit of the Lord is on me, because he has anointed me to preach good news to the poor. He has sent me to proclaim freedom for the prisoners and recovery of sight for the blind, to release the oppressed, to proclaim the year of the Lord's favor." Then he rolled up the scroll, gave it back to the attendant and sat down. The eyes of everyone in the synagogue were fastened on him, and he began by saying to them, "Today this scripture is fulfilled in your hearing" (Luke 4:13-21 from Isaiah 61:1-2).

### His Parables

Someone has said that a parable is an earthly

रहता है।" तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और उसे मन्दिर के सबसे ऊंचे स्थान पर खड़ा कर दिया। "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो," उसने कहा, "अपने आप को नीचे गिरा दो। क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतोंको आज्ञा देगा, और वे तुझे अपने हाथ में उठा लेंगे, कि तेरे पांव में पत्थर न लगे। यीशु ने उसे उत्तर दिया, 'यह भी लिखा है: अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न लेना।' फिर से, शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और उसे दुनिया के सभी राज्य और उनका वैभव दिखाया। "यह सब मैं तुम्हें दूंगा" उसने कहा, 'यदि तुम झुक कर मेरी उपासना करोगे। यीशु ने उस से कहा, हे शैतान, मुझ से दूर हो, क्योंकि लिखा है, अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना कर, और केवल उसी की उपासना कर। तब शैतान ने उसे छोड़ दिया, और स्वर्गदूत आकर उसके पास गए (मती 4:1-11)।

### उनका मिशन

जब शैतान ने यह सब प्रलोभन समाप्त कर दिया, तो उसने उसे एक उपयुक्त समय तक छोड़ दिया। यीशु आत्मा की शक्ति में गलील लौट आया, और उसके बारे में पूरे देश में खबर फैल गई। वह उनकी सभाओं में उपदेश देता था, और सब लोग उसकी प्रशंसा करते थे। वह नासरत को गया, जहां उसका पालन-पोषण हुआ था, और सब्त के दिन अपनी रीति के अनुसार आराधनालय में गया। और वह पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे सौंपी गई। उसे खोलकर, उसने वह स्थान पाया जहाँ लिखा है: 'प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने गरीबों को खुशखबरी सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे बन्दियों की स्वतन्त्रता और अंधों की दृष्टि की बहाली का प्रचार करने, शोषितों को छुड़ाने, और यहोवा के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करने के लिये भेजा है।' तब उस ने पुस्तक को लुढ़काकर सेवक को लौटा दिया और बैठ गया।

### उनके दृष्टान्त

किसी ने कहा है कि दृष्टान्त एक सांसारिक कहानी है जिसका एक स्वर्गीय अर्थ है। ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु की कई शिक्षाएँ दृष्टान्तों में की गई थीं। हो सकता है कि जो यहूदी ईश्वर को प्रसन्न करने की कोशिश कर रहे थे, वे इन दृष्टान्तों में से कई को समझ सकें, जबकि धार्मिक नेता जिनके दिल पद, शक्ति, प्रतिष्ठा और धन से अधिक चिंतित थे, उनका अर्थ नहीं समझ सके।

### उनके चमत्कार

चमत्कार का उद्देश्य क्या था? क्या यीशु अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहा था, चाहता था कि उसके देशवासी उसे अपना राजा बनायें या अभिषिक्त को भेजने के लिए परमेश्वर के वादे को पूरा कर रहे थे?

अक्सर बड़ी भीड़ यीशु का पीछा करती थी, शायद जिज्ञासा से, यह देखने की कोशिश कर रही थी कि "इसमें मेरे लिए क्या है?" या राजनीतिक सत्ता की

story with a heavenly meaning. It appears that many of the teachings of Jesus were done in parables. It may be that the Jews who were trying to please God could understand many of these parables, while the religious leaders whose hearts were more concerned with position, power, prestige and money could not comprehend their meaning.

### His Miracles

What was the purpose of the Miracles? Was Jesus trying to draw attention to Himself, wanting His countrymen to make Him their king or fulfilling God's promise to send the anointed one?

Often great crowds followed Jesus, perhaps out of curiosity, trying to see "what's in it for me?" or with desire for political power if He was to be king. Some may have believed He could be the Messiah. The witnesses to His miracles can be divided into three groups:

#### The Recipient of the Miracle

Surely all were filled with joy and gladness and most glorified God. The one notable exception was the cleansing of the ten lepers nine of which did not return to give God glory.

#### Those Witnessing the Miracle

The witnesses not only observed the miracle; they recognized man's limitations noting that only through God's power could such miracles be performed. They praised God and glorified Him.

#### The Religious Leaders

The religious leaders were commonly referred to as the Scribes and Pharisees. They had wealth, power, prestige and praise of men. They believed Jesus was going to destroy their nation, their position and power. Consequently, they refused to acknowledge He was from above or that any of the miracles He performed were from God. They attributed them to the power of the Devil. They wanted to kill Him but feared the people who believed He was from God. Finally, they violated many of their own traditions and laws, (trial on the Sabbath, seeking false witnesses, paying money for his capture but refusing it when returned acknowledging it was "blood money"). Ultimately, they said "Let Him come down from the cross and we will believe in Him". Instead of coming down

इच्छा के साथ अगर वह राजा बनना था। कुछ लोगों ने माना होगा कि वह मसीहा हो सकता है। उसके चमत्कारों के गवाहों को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है:

#### चमत्कार के प्राप्तकर्ता

निश्चय ही सब आनन्द और आनन्द से भरे हुए थे और परमेश्वर की बड़ाई करते थे। एक उल्लेखनीय अपवाद दस कोढ़ियों का शुद्धिकरण था, जिनमें से नौ परमेश्वर की महिमा करने के लिए वापस नहीं लौटे।

#### चमत्कार के साक्षी

गवाहों ने न केवल चमत्कार देखा; उन्होंने यह देखते हुए मनुष्य की सीमाओं को पहचाना कि केवल परमेश्वर की शक्ति के द्वारा ही ऐसे चमत्कार किए जा सकते हैं। उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की और उसकी महिमा की।

#### धार्मिक नेता

धार्मिक नेताओं को आमतौर पर शास्त्री और फरीसी के रूप में जाना जाता था। उनके पास धन, शक्ति, प्रतिष्ठा और पुरुषों की प्रशंसा थी। उनका मानना था कि यीशु उनके राष्ट्र, उनकी स्थिति और शक्ति को नष्ट करने जा रहे थे। नतीजतन, उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया कि वह ऊपर से था या उसके द्वारा किए गए चमत्कारों में से कोई भी भगवान से था। उन्होंने उन्हें शैतान की शक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया। वे उसे मारना चाहते थे, लेकिन उन लोगों से डरते थे जो मानते थे कि वह परमेश्वर की ओर से है। अंत में, उन्होंने अपनी कई परंपराओं और कानूनों का उल्लंघन किया, (सब्त के दिन मुकदमा, झूठे गवाहों की तलाश, उसे पकड़ने के लिए पैसे का भुगतान करना, लेकिन वापस लौटने पर यह स्वीकार करते हुए कि यह "रक्त का पैसा" था) मना कर दिया। अंत में, उन्होंने कहा, "उसे क्रूस पर से उतरने दो और हम उस पर विश्वास करेंगे"।

#### उसके दुश्मन

धर्मग्रंथ उन लोगों की पहचान करते हैं जो उनके सांसारिक मंत्रालय के दौरान मसीह का विरोध करते थे और उनके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद उनके चर्च का विरोध करते थे।

#### हेरोदेस (महान)

"वह कहाँ है जो यहूदियों का राजा पैदा हुआ है? हमने पूर्व में उसका तारा देखा और उसकी पूजा करने आए हैं।" ... जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह परेशान हो गया ... उसने उन्हें बेथलहम भेज दिया और कहा, "जाओ और बच्चे की सावधानीपूर्वक खोज करो। जैसे ही तुम उसे पाओ, मुझे रिपोर्ट

from the cross He came back to life after dying and they still refused to believe in Him.

#### His Enemies

The scriptures identify those opposed to Christ during His Earthly ministry and opposed to His church following His resurrection and ascension.

#### Herod (The Great)

“Where is the one who has been born king of the Jews? We saw his star in the east and have come to worship him”. ... When King Herod heard this he was disturbed ... He sent them to Bethlehem and said, “Go and make a careful search for the child. As soon as you find him, report to me, so that I too may go and worship him”. ... When Herod realized that he had been outwitted by the Magi, he was furious, and he gave orders to kill all the boys in Bethlehem and its vicinity who were two years old and under, in accordance with the time he had learned from the Magi (Matthew 2:2-3; 8, 16 NIV).

#### The Devil (Satan)

Then Jesus was led by the Spirit into the desert to be tempted by the devil. After fasting forty days and forty nights, he was hungry. The tempter came to him and said, “If you are the Son of God,” ... Again, the devil took him to a very high mountain and showed him all the kingdoms of the world and their splendor. “All this I will give you,” he said, “if you will bow down and worship me”. Jesus said to him, “Away from me, Satan! For it is written: ‘Worship the Lord your God, and serve him only’.” Then the devil left him, and angels came and attended him (Matthew 4:1-3; 8-11).

#### Citizens of Nazareth (Hometown folks)

Now it came to pass, when Jesus had finished these parables, that He departed from there. When He had come to His own country, He taught them in their synagogue, so that they were astonished and said, “Where did this Man get this wisdom and these mighty works? Is this not the carpenter’s son? Is not His mother called Mary? And His brothers James, Joses, Simon, and Judas? And His sisters, are they not all with us? Where then did this Man get all these things?” So, they were offended at Him (Matthew 13:53-57 NKJV).

#### Judas Iscariot (One of the Apostles)

Then one of the twelve, called Judas Iscariot, went to the chief priests and said, “What are you

करना, ताकि मैं भी जाकर उसकी पूजा कर सकूँ।” ... जब हेरोदेस को पता चला कि उसे जादूगरनी ने चकमा दे दिया है, तो वह क्रोधित हो गया, और उसने बेथलहम और उसके आसपास के सभी लड़कों को मारने का आदेश दिया, जो दो साल या उससे कम उम्र के थे, उस समय के अनुसार जो उसने सीखा था। मागी (मती 2:2-3; 8, 16 एनआईवी)।

#### शैतान (शैतान)

तब यीशु को आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया गया ताकि शैतान की परीक्षा हो। चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, वह भूखा था। परीक्षा देने वाला उसके पास आया और कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है,” ... फिर से, शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और उसे दुनिया के सभी राज्य और उनका वैभव दिखाया। “यह सब मैं तुम्हें दूंगा,” उसने कहा, “यदि आप झुकेंगे और मेरी पूजा करेंगे”। यीशु ने उससे कहा, “हे शैतान, मुझ से दूर हो! क्योंकि लिखा है: ‘अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो, और केवल उसी की उपासना करो’।” तब शैतान उसके पास से चला गया, और स्वर्गदूत उसके पास आए (मती 4:1-3; 8-11)।

#### नाजरेथ के नागरिक(गृहनगर लोग)

जब यीशु इन दृष्टान्तों को पूरा कर चुका, तब वह वहां से चला गया। जब वह अपने देश में आया, तो उनकी आराधनालय में उन्हें उपदेश दिया, कि वे चकित होकर कहने लगे, ‘इस मनुष्य को यह ज्ञान और ये शक्तिशाली कार्य कहाँ से मिले? क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसकी माता मरियम नहीं कहलाती? और उसके भाई याकूब, योसेस, शमौन और यहूदा? और उसकी बहनों, क्या वे सब हमारे साथ नहीं हैं? फिर इस आदमी को ये सब चीज़ें कहाँ से मिलीं?’ इसलिए, वे उस पर नाराज थे (मती 13:53-57 एनकेजेवी)।

#### यहूदा इस्करियोती(पेरितों में से एक)

तब बारहों में से एक, जो यहूदा इस्करियोती कहलाता है, महायाजकों के पास गया, और कहा, यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ में कर दूँ, तो तुम मुझे क्या देना चाहते हो? और उन्होंने उसके लिथे चान्दी के तीस टुकड़े गिने। इसलिए, उस समय से उसने अपने साथ विश्वासघात करने का अवसर मांगा (मती 26:14-16 26:3-4 एनकेजेवी)।

#### फरीसी, मुख्य याजक, प्राचीन, शास्त्री और परिषद

जब वे बाहर निकले, तो क्या देखा, कि वे गूंगा और दुष्टात्माओं से ग्रस्त एक मनुष्य को उसके पास ले आए। और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोला। और भीड़ ने अचम्भा किया, और कहा, इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया था! ... परन्तु फरीसियों ने कहा, “वह दुष्टात्माओं के सरदार के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता है”। ... देखो, एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था। और उन्होंने उस से पूछा, क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है? -

willing to give me if I deliver Him to you?" And they counted out to him thirty pieces of silver. So, from that time he sought opportunity to betray Him (Matthew 26:14-16 26:3-4 NKJV).

#### Pharisees, Chief Priests, Elders, Scribes and Council

As they went out, behold, they brought to Him a man, mute and demon-possessed. And when the demon was cast out, the mute spoke. And the multitudes marveled, saying, "It was never seen like this in Israel!" ... But the Pharisees said, "He casts out demons by the ruler of the demons". ... behold, there was a man who had a withered hand. And they asked Him, saying, "Is it lawful to heal on the Sabbath?" — that they might accuse Him. Then He said to them, "What man is there among you who has one sheep, and if it falls into a pit on the Sabbath, will not lay hold of it and lift it out? Of how much more value then, is a man than a sheep? Therefore, it is lawful to do good on the Sabbath." Then He said to the man, "Stretch out your hand." And he stretched it out, and it was restored as whole as the other. Then the Pharisees went out and plotted against Him, how they might destroy Him. ... Now when the chief priests and Pharisees heard His parables, they perceived that He was speaking of them. But when they sought to lay hands on Him, they feared the multitudes, because they took Him for a prophet (Matthew 9:32-34; 12:10-14; 21:45-46 NKJV).

Then Jesus spoke to the multitudes and to His disciples, saying: "The scribes and the Pharisees sit in Moses' seat. Therefore, whatever they tell you to observe, that observe and do, but do not do according to their works; for they say, and do not do" ... "But woe to you, scribes and Pharisees, hypocrites! For you shut up the kingdom of heaven against men; for you neither go in yourselves, nor do you allow those who are entering to go in." ... Then the chief priests, the scribes, and the elders of the people assembled at the palace of the high priest, who was called Caiaphas, and plotted to take Jesus by trickery and kill Him (Matthew 23:1-3; 13-14 NKJV).

And those who had laid hold of Jesus led Him away to Caiaphas the high priest, where the scribes and the elders were assembled. But Peter followed Him at a distance to the high priest's courtyard. And he went in and sat with the servants to see the end. Now the chief priests, the elders, and all the council sought false

ताकि वे उस पर दोष लगा सकें। तब उस ने उन से कहा, तुम में ऐसा कौन मनुष्य है, जिसके पास एक भेड़ हो, और यदि वह सब्त के दिन किसी गड़हे में गिर जाए, तो उसे पकड़कर न निकाले? भेड़ की तुलना में? इसलिए सब्त के दिन भलाई करना उचित है।" तब उस ने उस पुरुष से कहा, अपना हाथ बढ़ा। और उस ने उसे बढ़ाया, और वह दूसरे के समान चंगा हो गया। तब फरीसियों ने निकलकर उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा, कि उसे किस रीति से नाश करें। ... अब जब महायाजकों और फरीसियों ने उसके दृष्टान्तों को सुना, तो उन्होंने जान लिया कि वह उन्हीं की बात कर रहा है। परन्तु जब उन्होंने उस पर हाथ रखना चाहा, तो वे भीड़ से डरते थे, क्योंकि उन्होंने उसे भविष्यद्वक्ता के रूप में लिया था (मती 9:32-34; 12:10-14; 21:45-46 एनकेजेवी)।

तब यीशु ने भीड़ और अपने चेलों से कहा, "शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। इसलिये जो कुछ वे तुझ से कहने को कहें, कि मानना, और करना, परन्तु उनके कामोंके अनुसार न करना; क्योंकि वे कहते हैं, और करते नहीं" ... "परन्तु, हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! क्योंकि तू ने स्वर्ग के राज्य को मनुष्यों के साम्हने बन्द कर रखा है; क्योंकि न तो तुम अपने भीतर जाते हो, और न आनेवालोंको भीतर जाने देते हो।" ... तब महायाजक, शास्त्री, और प्रजा के पुरनिये महायाजक के भवन में जो कैफा कहलाता था, इकट्ठे हुए।, और यीशु को छल से लेने और उसे मारने की साजिश रची (मती 23:1-3; 13-14 एनकेजेवी)।

और जिन लोगों ने यीशु को पकड़ लिया था, वे उसे महायाजक कैफा के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिये इकट्ठे हुए थे। परन्तु पतरस उसके पीछे पीछे महायाजक के आंगन तक गया। और वह भीतर जाकर अन्त देखने को सेवकोंके संग बैठ गया। अब महायाजकों, पुरनियों, और सारी सभा ने यीशु को मार डालने के लिये उसके विरुद्ध झूठी गवाही चाही, परन्तु कोई न मिला। भले ही बहुत से झूठे गवाह सामने आए, लेकिन उन्हें कोई नहीं मिला (मती 26:57-60 एनकेजेवी)।

#### प्रश्न

1. वे चमत्कार जो यीशु ने गुप्त रूप से किए।

टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_

2. यीशु के शत्रु कौन थे?

एक। \_\_\_\_\_ आम आदमी

बी। \_\_\_\_\_ धार्मिक नेता

3. यहूदी धर्मगुरुओं ने विश्वास करने से इनकार कर दिया क्योंकि

एक। \_\_\_\_\_ उन्होंने उसके द्वारा किए गए किसी भी चमत्कार को नहीं देखा

testimony against Jesus to put Him to death, but found none. Even though many false witnesses came forward, they found none (Matthew 26:57-60 NKJV).

#### Questions

1. The miracles Jesus performed in secret.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
2. Who were the enemies of Jesus?
  - a. \_\_\_\_\_ The common man
  - b. \_\_\_\_\_ The religious leaders
3. The Jews religious leaders refused to believe because
  - a. \_\_\_\_\_ They did not see any of the miracles He performed
  - b. \_\_\_\_\_ They were more interested in position and prestige
  - c. \_\_\_\_\_ Jesus never told them about their sinful condition
4. Isiah prophesied that Jesus was
  - a. \_\_\_\_\_ preach the gospel to the poor
  - b. \_\_\_\_\_ proclaim freedom for the prisoners
  - c. \_\_\_\_\_ recover sight for the blind
  - d. \_\_\_\_\_ release the oppressed
  - e. \_\_\_\_\_ proclaim the year of the lord
  - f. \_\_\_\_\_ all the above
  - g. \_\_\_\_\_ a, b and c
5. Satan tempted Jesus but Jesus did not yield to his temptations.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_

#### The Sin-Offering – Jesus’s atoning Sacrifice Lesson 5

##### Arrest

Jesus said to the chief priests, the temple guard, and the elders, who had come for him, ‘Am I leading a rebellion, that you have come with swords and clubs? Every day I was with you in the temple courts, and you did not lay a hand on me. But this is your hour-when darkness reigns.’ Then seizing him, they led him away and took him into the house of the high priest (Luke 22:52-54).

##### Jews Mock Trial

The men who were guarding Jesus began mocking and beating him. They blindfolded him and demanded, “Prophesy! Who hit you?” And they said many other insulting things to him. At daybreak the council of the elders of the people, both the chief priests and teachers of

बी। \_\_\_\_\_ वे पद और प्रतिष्ठा में अधिक रुचि रखते थे  
सी। \_\_\_\_\_ यीशु ने उन्हें उनकी पापी दशा के बारे में कभी नहीं बताया

4. इसियाह ने भविष्यवाणी की थी कि यीशु था  
एक। \_\_\_\_\_ गरीबों को सुसमाचार का प्रचार करें  
बी। \_\_\_\_\_ बंदियों के लिए आजादी की घोषणा  
सी। \_\_\_\_\_ अंधों के लिए दृष्टि ठीक करना  
डी। \_\_\_\_\_ उत्पीड़ितों को रिहा करो  
ई। \_\_\_\_\_ प्रभु के वर्ष की घोषणा करें  
एफ। \_\_\_\_\_ सब से ऊपर  
जी। \_\_\_\_\_ ए, बी और सी
5. शैतान ने यीशु की परीक्षा ली परन्तु यीशु अपनी परीक्षा के आगे न झुके।  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_

#### पाप-बलि - यीशु का प्रायश्चित बलिदान

##### पाठ 5

##### गिरफ्तार करना

यीशु ने महायाजकों, और मन्दिर के पहरेदारों, और पुरनियों से, जो उसके लिये आए थे, कहा, क्या मैं विद्रोह कर रहा हूँ, कि तुम तलवारें और लाठियां लिए आए हो? मैं प्रति दिन मन्दिर के आंगनों में तेरे संग रहा करता, और तू ने मुझ पर हाथ न लगाया। लेकिन यह तुम्हारी घड़ी है-जब अंधेरा राज करता है। तब वे उसे पकड़कर ले गए और महायाजक के घर में ले गए (लूका 22:52-54)।

##### यहूदी नकली परीक्षण

जो लोग यीशु की रखवाली कर रहे थे, वे उसका मज़ाक उड़ाने और उसकी पिटाई करने लगे। उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी बाँधी और माँग की, “भविष्यद्वाणी! किसने आपको टक्कर मारी?” और उन्होंने और भी बहुत सी अपमानजनक बातें उस से कही। भोर के समय लोगों के पुरनियों की महासभा, दोनों महायाजक और कानून के शिक्षक, एक साथ मिले, और यीशु उनके सामने ले जाया गया। “यदि आप मसीह हैं,” उन्होंने कहा, “हमें बताओ।” यीशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं तुम से कहूँ, तो तुम मेरी प्रतीति न करोगे, और यदि मैं तुम से पूछूँ, तो तुम उत्तर न दोगे। परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र पराक्रमी परमेश्वर के दाहिने विराजमान होगा।” सबने पूछा, “तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?” उन्होंने उत्तर दिया, “मैं कह रहा हूँ कि आप सही हैं।” तब उन्होंने कहा, ‘हमें और गवाही की क्या आवश्यकता है? हम ने यह उसके ही होठों से सुना है’ (लूका 22:63-71)।

##### रोमन परीक्षण

the law, met together, and Jesus was led before them. "If you are the Christ," they said, "tell us." Jesus answered, "If I tell you, you will not believe me, and if I asked you, you would not answer. But from now on, the Son of Man will be seated at the right hand of the mighty God." They all asked, "Are you then the Son of God?" He replied, "You are right in saying I am." Then they said, "Why do we need any more testimony? We have heard it from his own lips" (Luke 22:63-71).

#### Roman Trial

Pilate then went back inside the palace, summoned Jesus and asked him, "Are you the king of the Jews?" "Is that your own idea," Jesus asked, "or did others talk to you about me?" "Am I a Jew?" Pilate replied. "It was your people and your chief priests who handed you over to me. What is it you have done?" Jesus said, "My kingdom is not of this world. If it were, my servants would fight to prevent my arrest by the Jews. But now my kingdom is from another place." "You are a king, then!" said Pilate. Jesus answered, "You are right in saying I am a king. In fact, for this reason I was born, and for this I came into the world, to testify to the truth. Everyone on the side of truth listens to me" (John 18:33-37)

Pilate called together the chief priests, the rulers and the people, and said to them, "You brought me this man as one who was inciting the people to rebellion. I have examined him in your presence and have found no basis for your charges against him. Neither has Herod, for he sent him back to us; as you can see, he has done nothing to deserve death. Therefore, I will punish him and then release him." With one voice they cried out, "Away with this man! Release Barabbas to us!" (Barabbas had been thrown into prison for an insurrection in the city, and for murder.) Wanting to release Jesus, Pilate appealed to them again. But they kept shouting, "Crucify him! Crucify him!" For the third time he spoke to them: "Why? What crime has this man committed? I have found in him no grounds for the death penalty. Therefore, I will have him punished and then release him." But with loud shouts they insistently demanded that he be crucified, and their shouts prevailed. So, Pilate decided to grant their demand (Luke 23:13-24).

While Pilate was sitting on the judge's seat, his wife sent him this message: "Don't have

पीलातुस फिर महल के भीतर गया, और यीशु को बुलवाकर पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? "क्या यह आपका अपना विचार है," यीशु ने पूछा, "या दूसरों ने आपसे मेरे बारे में बात की?" "क्या मैं एक यहूदी हूँ?" पीलातुस ने उत्तर दिया। "तेरी प्रजा और महायाजकों ने तुझे मेरे वश में कर दिया। तुमने क्या किया है?" यीशु ने कहा, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो मेरे सेवक यहूदियों द्वारा मेरी गिरफ्तारी को रोकने के लिए संघर्ष करते। परन्तु अब मेरा राज्य दूसरी जगह से है।" "तो फिर तुम राजा हो!" पीलातुस ने कहा। यीशु ने उत्तर दिया, "तुम ठीक कह रहे हो कि मैं राजा हूँ। वास्तव में मेरा जन्म इसी कारण से हुआ है, और मैं जगत में इसलिये आया हूँ, कि सत्य की गवाही दूँ। सच्चाई के पक्ष में हर कोई मेरी सुनता है" (यूहन्ना 18:33-37)

पीलातुस ने महायाजकों, हाकिमों और प्रजा के लोगों को बुलवाकर कहा, "तुम इस मनुष्य को मेरे पास ले आए, जो प्रजा को बलवा करने के लिए उकसाता था। मैंने आपकी उपस्थिति में उसकी जांच की है और उसके विरुद्ध आपके आरोपों का कोई आधार नहीं पाया है। हेरोदेस के पास भी नहीं, क्योंकि उस ने उसे हमारे पास लौटा दिया है; जैसा कि आप देख सकते हैं, उसने मौत के लायक कुछ भी नहीं किया है। इसलिए, मैं उसे दण्ड दूंगा और फिर उसे छोड़ दूंगा।" वे एक स्वर में चिल्ला उठे, "इस आदमी को दूर करो! बरअब्बा को हमारे लिये छोड़ दो!" (बरअब्बा को नगर में विद्रोह, और हत्या के कारण कारागार में डाल दिया गया था।) यीशु को रिहा करना चाहते थे, पीलातुस ने उनसे फिर से अपील की। परन्तु वे चिल्लाते रहे, "उसे क्रूस पर चढ़ा! उसे सूली पर चढ़ा दो!" तीसरी बार उसने उनसे कहा: "क्यों? इस आदमी ने क्या अपराध किया है? मैंने उसमें मृत्युदंड के लिए कोई आधार नहीं पाया है। इसलिए,

जब पीलातुस न्यायी के आसन पर बैठा था, तब उसकी पत्नी ने उसे यह सन्देश भेजा: "उस निर्दोष मनुष्य से कुछ न लेना, क्योंकि उसके कारण मैं ने आज स्वप्न में बहुत दुख उठाया है" (मती 27:19)।

भीड़ को संतुष्ट करने के लिए पीलातुस ने बरअब्बा को उनके लिए रिहा कर दिया। उसने यीशु को कोड़े मारे, और उसे सूली पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया (मरकुस 15:15)।

#### सूली पर चढ़ाया

सिपाहियों ने यीशु को महल (यानी प्रेटोरियम) में ले जाया और सैनिकों की पूरी टीम को एक साथ बुलाया। उन्होंने उस पर बैजनी वस्त्र पहिनाया, और कांटों का मुकुट गूँथकर उस पर लगाया। और वे उसे पुकारने लगे, "यहूदियों के राजा, जय हो!" वे बार-बार लाठी से उसके सिर पर वार करते और उस पर थूकते थे। उन्होंने घुटनों के बल गिरकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। और जब उन्होंने उसका ठट्ठा किया, तब उन्होंने बैजनी चोगा उतार दिया, और उसी के वस्त्र

anything to do with that innocent man, for I have suffered a great deal today in a dream because of him” (Matthew 27:19).

Wanting to satisfy the crowd, Pilate released Barabbas to them. He had Jesus flogged, and handed him over to be crucified (Mark 15:15).

### Crucifixion

The soldiers led Jesus away into the palace (that is, the Praetorium) and called together the whole company of soldiers. They put a purple robe on him, then twisted together a crown of thorns and set it on him. And they began to call out to him, “Hail, king of the Jews!” Again and again they struck him on the head with a staff and spit on him. Falling on their knees, they paid homage to him. And when they had mocked him, they took off the purple robe and put his own clothes on him. Then they led him out to crucify him (Mark 15:15-20).

They came to a place called Golgotha (which means The Place of the Skull). There they offered Jesus wine to drink, mixed with gall; but after tasting it, he refused to drink it. When they had crucified him, they divided up his clothes by casting lots. And sitting down, they kept watch over him there. Above his head they placed the written charge against him: THIS IS JESUS, THE KING OF THE JEWS (Matthew 27:33-37).

It was the third hour [9:00 AM] when they crucified him. The written notice of the charge against him read: THE KING OF THE JEWS (Mark 15:25-27).

At the sixth hour [noon] darkness came over the whole land until the ninth hour. And at the ninth hour Jesus cried out in a loud voice, “Eloi, Eloi, lama sabachthani?” - which means, My God, my God, why have you forsaken me (Mark 15:33-34)?

When some of those standing near heard this, they said, “Listen, he's calling Elijah.” One man ran, filled a sponge with wine vinegar, put it on a stick, and offered it to Jesus to drink. “Now leave him alone. Let's see if Elijah comes to take him down,” he said. With a loud cry, Jesus breathed his last. The curtain of the temple was torn in two from top to bottom. And when the centurion, who stood there in front of Jesus, heard his cry and saw how he died, he said, “Surely this man was the Son of God (Mark

15:33-34)? उस पर पहिना दिए। तब वे उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए बाहर ले गए (मरकुस 15:15-20)।

वे गोलगोथा (जिसका अर्थ है खोपड़ी का स्थान) नामक स्थान पर आए। वहाँ उन्होंने यीशु को पित्त मिला हुआ दाखमधु पिलाया; लेकिन उसे चखने के बाद उसने पीने से इनकार कर दिया। जब उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया, तो चिट्ठी डालकर उसके कपड़े बांट दिए। और वे बैठे बैठे उस पर पहरा देते रहे। उन्होंने उसके सिर के ऊपर लिखित आरोप लगाया: यह यीशु, यहूदियों का राजा है (मत्ती 27:33-37)।

यह तीसरा घंटा [9:00 पूर्वाह्न] था जब उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया। उसके खिलाफ आरोप की लिखित सूचना पढ़ी गई: यहूदियों का राजा (मरकुस 15:25-27)।

छठवें पहर [दोपहर] के नौवें पहर तक सारे देश में अन्धकार छा गया। और नौवें घंटे में यीशु ने ऊंचे शब्द से पुकारा, "एलोई, एलोई, लमा शबक्तनी?" - जिसका अर्थ है, मेरे भगवान, मेरे भगवान, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया (मरकुस 15:33-34)?

यह सुनकर पास खड़े लोगों में से कितनों ने कहा, सुन, वह एलिय्याह को पुकार रहा है। एक आदमी दौड़ा, एक स्पंज में दाखमधु के सिरके से भरकर एक डंडी पर रखा, और उसे पीने के लिए यीशु को दिया। "अब उसे अकेला छोड़ दो। देखते हैं कि क्या एलिय्याह उसे नीचे उतारने के लिए आता है," उसने कहा। जोर से रोने के साथ, यीशु ने अंतिम सांस ली। मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। और जब उस सूबेदार ने, जो यीशु के साम्हने खड़ा था, उसकी दोहाई सुनी और देखा कि वह कैसे मरा, तो उसने कहा, निश्चय यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था (मरकुस 15:35-39)!

वह तैयारी का दिन था (अर्थात् सब्त से एक दिन पहले)। सो जैसे ही संध्या हुई, अरिमथिया का यूसुफ, जो परिषद का एक प्रमुख सदस्य था, जो स्वयं परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहा था, निडरता से पीलातुस के पास गया और यीशु के शरीर के लिए कहा। पीलातुस यह सुनकर चकित रह गया कि वह पहले ही मर चुका है। सूबेदार को बुलाकर उसने उससे पूछा कि क्या यीशु पहले ही मर चुका है। जब उस ने सूबेदार से जान लिया कि ऐसा ही है, तो उस ने उसकी लोथ यूसुफ को दे दी। तब यूसुफ ने सन का कुछ कपड़ा मोल लिया, और लोथ को उतारकर उस सनी में लपेटा, और चट्टान की तराशी हुई कब्र में रखा। फिर उसने कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़काया (मरकुस 15:42-46)।

### जी उठने

सब्त के बाद, सप्ताह के पहले दिन भोर में, मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने गईं। एक भयंकर भूकम्प हुआ, क्योंकि यहोवा का एक

15:35-39)!

It was Preparation Day (that is, the day before the Sabbath). So as evening approached, Joseph of Arimathea, a prominent member of the Council, who was himself waiting for the kingdom of God, went boldly to Pilate and asked for Jesus' body. Pilate was surprised to hear that he was already dead. Summoning the centurion, he asked him if Jesus had already died. When he learned from the centurion that it was so, he gave the body to Joseph. So Joseph bought some linen cloth, took down the body, wrapped it in the linen, and placed it in a tomb cut out of rock. Then he rolled a stone against the entrance of the tomb (Mark 15:42-46).

### Resurrection

After the Sabbath, at dawn on the first day of the week, Mary Magdalene and the other Mary went to look at the tomb. There was a violent earthquake, for an angel of the Lord came down from heaven and, going to the tomb, rolled back the stone and sat on it. His appearance was like lightning, and his clothes were white as snow. The guards were so afraid of him that they shook and became like dead men. The angel said to the women, "Do not be afraid, for I know that you are looking for Jesus, who was crucified. He is not here; he has risen, just as he said" (Matthew 28:1-6).

On the evening of that first day of the week, when the disciples were together, with the doors locked for fear of the Jews, Jesus came and stood among them and said, "Peace be with you!" After he said this, he showed them his hands and side. The disciples were overjoyed when they saw the Lord. Again Jesus said, "Peace be with you! As the Father has sent me, I am sending you." And with that he breathed on them and said, "Receive the Holy Spirit" (John 20:19-22).

A week later his disciples were in the house again, and Thomas was with them. Though the doors were locked, Jesus came and stood among them and said, "Peace be with you!" Then he said to Thomas, "Put your finger here; see my hands. Reach out your hand and put it into my side. Stop doubting and believe." Thomas said to him, "My Lord and my God" (John 20:26-28)!

### Ascension

In my former book, Theophilus, I wrote about

दूत स्वर्ग से उतरा, और कब्र पर जाकर पत्थर को लुढ़काकर उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली की तरह था, और उसके कपड़े बर्फ की तरह सफेद थे। पहरेदार उससे इतना डरते थे कि वे काँपते थे और मरे हुए लोगों की तरह हो जाते थे। स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, "डरो मत, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ रही हो। वह यहां नहीं है; जैसा उस ने कहा, वह जी उठा है" (मत्ती 28:1-6)।

सप्ताह के उस पहिले दिन की सांझ को जब चेले यहूदियों के डर से द्वार बन्द किए हुए थे, तब यीशु आया, और उनके बीच खड़ा हो गया, और कहा, तुझे शान्ति मिले! इतना कहने के बाद उसने उन्हें अपने हाथ और बाजू दिखाए। प्रभु को देखकर शिष्य बहुत प्रसन्न हुए। यीशु ने फिर कहा, "तुम्हें शान्ति मिले! जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेज रहा हूँ।" और उस ने उन पर फूँक मारी और कहा, "पवित्र आत्मा प्राप्त करो" (यूहन्ना 20:19-22)।

एक सप्ताह बाद उसके चेले फिर घर में थे, और थोमा उनके साथ था। हालाँकि दरवाजे बंद थे, फिर भी यीशु आया और उनके बीच खड़ा हो गया और कहा, "तुम्हें शांति मिले!" तब उसने थोमा से कहा, "अपनी उँगली यहाँ रख; मेरे हाथ देखो। अपना हाथ बढ़ा कर मेरी बाजू में रख दो। संदेह करना बंद करो और विश्वास करो।" थोमा ने उससे कहा, "हे मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर" (यूहन्ना 20:26-28)!

### अधिरोहण

अपनी पिछली किताब, थिओफिलस में, मैंने उन सभी के बारे में लिखा था जो यीशु ने करना शुरू किया और उस दिन तक सिखाया जब तक कि उन्हें स्वर्ग में नहीं ले जाया गया, पवित्र आत्मा के माध्यम से प्रेरितों को निर्देश देने के बाद उन्हें चुना गया। अपनी पीड़ा के बाद, उसने खुद को इन लोगों को दिखाया और कई पुख्ता सबूत दिए कि वह जीवित था। वह चालीस दिनों की अवधि में उनके सामने प्रकट हुआ और परमेश्वर के राज्य के बारे में बोला। एक अवसर पर, जब वह उनके साथ भोजन कर रहा था, उसने उन्हें यह आज्ञा दी: "यरूशलेम को मत छोड़ो, परन्तु उस भेंट की बाट जोहते रहो, जिसका वचन मेरे पिता ने दिया है, जिसके विषय में तुम ने मुझे बोलते सुना है। क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु थोड़े ही दिनों में तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।" सो जब वे इकट्ठे हुए, तो उस से पूछा, हे यहोवा, क्या तू इसी समय इस्राएल का राज्य फेर देने वाला है? उसने उनसे कहा: "पिता ने अपने अधिकार से जो समय या तारीखें निर्धारित की हैं, उन्हें जानना आपके लिए नहीं है। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।" यह कहकर वह उन की आंखों के साम्हने उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन के साम्हने से छिपा लिया। जब वह जा रहा

all that Jesus began to do and to teach until the day he was taken up to heaven, after giving instructions through the Holy Spirit to the apostles he had chosen. After his suffering, he showed himself to these men and gave many convincing proofs that he was alive. He appeared to them over a period of forty days and spoke about the kingdom of God. On one occasion, while he was eating with them, he gave them this command: "Do not leave Jerusalem, but wait for the gift my Father promised, which you have heard me speak about. For John baptized with water, but in a few days you will be baptized with the Holy Spirit." So, when they met together, they asked him, "Lord, are you at this time going to restore the kingdom to Israel?" He said to them: "It is not for you to know the times or dates the Father has set by his own authority. But you will receive power when the Holy Spirit comes on you; and you will be my witnesses in Jerusalem, and in all Judea and Samaria, and to the ends of the earth." After he said this, he was taken up before their very eyes, and a cloud hid him from their sight. They were looking intently up into the sky as he was going, when suddenly two men dressed in white stood beside them. "Men of Galilee," they said, "why do you stand here looking into the sky? This same Jesus, who has been taken from you into heaven, will come back in the same way you have seen him go into heaven" (Acts 1:1-11).

#### Questions

- The Roman soldiers charged with the responsibility of crucifying Jesus said.
  - When will those Jews learn they cannot defeat us?
  - This man must have done something terrible for His religious leaders want Him to be crucified.
  - Surely this man was the Son of God
  - Another insurrectionist learned the hard way
- There is no record that Jesus was buried.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
- The morning after the Sabbath following Jesus death and burial in a guarded tomb, there was
  - An earthquake when the stone was rolled away
  - An angel of the Lord came to

था, तब वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, तभी अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। "गलील के लोगों," उन्होंने कहा, "तुम यहाँ क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यह वही यीशु, जो तुम से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, फिर उसी रीति से लौटेगा जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग में जाते देखा है" (प्रेरितों के काम 1:1-11)। और पृथ्वी की छोर तक।" यह कहकर वह उन की आंखों के साम्हने उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन के साम्हने से छिपा लिया। जब वह जा रहा था, तब वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, तभी अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। "गलील के लोगों," उन्होंने कहा, "तुम यहाँ क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यह वही यीशु, जो तुम से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, फिर उसी रीति से लौटेगा जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग में जाते देखा है" (प्रेरितों के काम 1:1-11)। और पृथ्वी की छोर तक।" यह कहकर वह उन की आंखों के साम्हने उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन के साम्हने से छिपा लिया। जब वह जा रहा था, तब वे आकाश की ओर ध्यान से देख रहे थे, तभी अचानक सफेद कपड़े पहने दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। "गलील के लोगों," उन्होंने कहा, "तुम यहाँ क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यह वही यीशु, जो तुम से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, फिर उसी रीति से लौटेगा जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग में जाते देखा है" (प्रेरितों के काम 1:1-11)।

#### प्रश्न

- जीसस को सूली पर चढ़ाने की जिम्मेदारी के आरोप में रोमी सैनिकों ने कहा।
  - एक। \_\_\_\_\_ वे यहूदी कब सीखेंगे कि वे हमें हरा नहीं सकते?
  - इस आदमी ने कुछ भयानक किया होगा क्योंकि उसके धार्मिक नेता चाहते हैं कि उसे सूली पर चढ़ाया जाए।
  - सी। \_\_\_\_\_ निश्चित रूप से यह आदमी परमेश्वर का पुत्र था।
  - डी। \_\_\_\_\_ एक और विद्रोही ने कठिन तरीके से सीखा।
- कोई रिकॉर्ड नहीं है कि यीशु को दफनाया गया था।
  - टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_
- यीशु की मृत्यु और एक संरक्षित कब्र में दफनाने के बाद सब्त के बाद की सुबह थी
  - एक। \_\_\_\_\_ भूकंप जब पत्थर लुढ़क गया।
  - बी। \_\_\_\_\_ प्रभु का एक दूत पृथ्वी पर आया।
  - सी। \_\_\_\_\_ मकबरे की रखवाली करने वाले मरे हुए आदमी बन गए।
  - डी। \_\_\_\_\_ यीशु को फिर से जीवित किया गया, पुनर्जीवित किया गया।
  - इ। \_\_\_\_\_ सब से ऊपर।

earth

- c. \_\_\_\_\_ Those guarding the tomb became as dead men  
d. \_\_\_\_\_ Jesus had been raised back to life, resurrected  
e. \_\_\_\_\_ All the above

4. Following his resurrection Jesus was seen by  
a. \_\_\_\_\_ His Apostles  
b. \_\_\_\_\_ A few and unreliable people  
c. \_\_\_\_\_ Hundreds of people  
d. \_\_\_\_\_ A and C
5. No one witnessed Jesus going to Heaven following His resurrection. It is just a clever story made up by His disciples for their own personal gain.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_

### Woes and Warnings

#### Lesson 6

To the Antichrists (Those who deny Christ is God)

This is how you can recognize the Spirit of God: Every spirit that acknowledges that Jesus Christ has come in the flesh is from God, but every spirit that does not acknowledge Jesus is not from God. This is the spirit of the antichrist, which you have heard is coming and even now is already in the world (1 John 4:2-3 NIV).

Many deceivers, who do not acknowledge Jesus Christ as coming in the flesh, have gone out into the world. Any such person is the deceiver and the antichrist (2 John 7 NIV).

Enter through the narrow gate. For wide is the gate and broad is the road that leads to destruction, and many enter through it. But small is the gate and narrow the road that leads to life, and only a few find it (Matthew 7:13-14).

So, in everything, do to others what you would have them do to you, for this sums up the Law and the Prophets (Matthew 7:12).

#### To Christians

I appeal to you, brothers, in the name of our Lord Jesus Christ, that all of you agree with one another so that there may be no divisions among you and that you may be perfectly united in mind and thought. (1 Corinthians 1:10)

Watch out for false prophets. They come to you in sheep's clothing, but inwardly they are

4. अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु को किसके द्वारा देखा गया था  
एक। \_\_\_\_\_ उनके प्रेरित  
बी। \_\_\_\_\_ कुछ और अविश्वसनीय लोग  
सी। \_\_\_\_\_ सैकड़ों लोगों की  
डी। \_\_\_\_\_ ए और सी

5. किसी ने यीशु को उसके पुनरुत्थान के बाद स्वर्ग जाते हुए नहीं देखा। यह उनके शिष्यों द्वारा अपने निजी लाभ के लिए बनाई गई एक चतुर कहानी है।

टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_

### संकट और चेतावनी

पाठ 6

मसीह विरोधी के लिए (जो लोग मसीह को नकारते हैं, वे परमेश्वर हैं)

इस प्रकार आप परमेश्वर के आत्मा को पहचान सकते हैं: प्रत्येक आत्मा जो स्वीकार करती है कि यीशु मसीह शरीर में आया है, वह परमेश्वर की ओर से है, परन्तु प्रत्येक आत्मा जो यीशु को स्वीकार नहीं करती है, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके बारे में आपने सुना है कि आ रही है और अब भी दुनिया में है (1 यूहन्ना 4:2-3 एनआईवी)।

बहुत से धोखेबाज, जो यीशु मसीह को शरीर में आने के रूप में स्वीकार नहीं करते, दुनिया में निकल गए हैं। ऐसा कोई भी व्यक्ति धोखेबाज और मसीह विरोधी है (2 यूहन्ना 7 एनआईवी)।

संकरे गेट से प्रवेश करें। क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है, और बहुतेरे उस से प्रवेश करते हैं। परन्तु छोटा है वह फाटक और संकरा वह मार्ग जो जीवन की ओर ले जाता है, और थोड़े ही उसे पाते हैं (मती 7:13-14)।

सो हर बात में दूसरों के साथ वही करो जो तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें, क्योंकि यह व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का सार है (मती 7:12)।

#### ईसाइयों के लिए

हे भाइयों, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से बिनती करता हूँ, कि तुम सब एक दूसरे से सहमत हो जाओ, कि तुम में फूट न हो, और तुम मन और विचार में एक हो जाओ। (1 कुरिन्थियों 1:10)

झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहें। वे भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे क्रूर भेड़िये हैं। उनके फल से तुम उन्हें पहचान लोगे (मती 7:15-16)।

ferocious wolves. By their fruit you will recognize them (Matthew 7:15-16).

I urge you, brothers, to watch out for those who cause divisions and put obstacles in your way that are contrary to the teaching you have learned. Keep away from them. For such people are not serving our Lord Christ, but their own appetites. By smooth talk and flattery, they deceive the minds of naive people (Romans 16:17-18).

Keep watch over yourselves and all the flock of which the Holy Spirit has made you overseers. Be shepherds of the church of God, which he bought with his own blood. I know that after I leave, savage wolves will come in among you and will not spare the flock. Even from your own number men will arise and distort the truth in order to draw away disciples after them. So be on your guard! Remember that for three years I never stopped warning each of you night and day with tears (Acts 20:28-31).

I warn everyone who hears the words of the prophecy of this book: If anyone adds anything to them, God will add to him the plagues described in this book. And if anyone takes words away from this book of prophecy, God will take away from him his share in the tree of life and in the holy city, which are described in this book (Revelation 22:18-19).

The ax is already at the root of the trees, and every tree that does not produce good fruit will be cut down and thrown into the fire (Matthew 3:10).

For the sinful nature desires what is contrary to the Spirit, and the Spirit what is contrary to the sinful nature. They are in conflict with each other, so that you do not do what you want. But if you are led by the Spirit, you are not under law (Galatians 5:17-18).

The acts of the sinful nature are obvious: sexual immorality, impurity and debauchery; idolatry and witchcraft; hatred, discord, jealousy, fits of rage, selfish ambition, dissensions, factions and envy; drunkenness, orgies, and the like. I warn you, as I did before, that those who live like this will not inherit the kingdom of God (Galatians 5:19-21).

Nothing impure will ever enter it, nor will anyone who does what is shameful or deceitful,

हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूँ, कि उन लोगों से सावधान रहो जो फूट डालते हैं और तुम्हारे मार्ग में बाधा डालते हैं जो तुम्हारे द्वारा सीखी गई शिक्षा के विपरीत हैं। इनसे दूर रहें। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने ही भूखों की सेवा करते हैं। चिकनी-चुपड़ी बातें और चापलूसी से, वे भोले लोगों के मन को धोखा देते हैं (रोमियों 16:17-18)।

अपनी और उस सारी झुण्ड की रखवाली करो, जिसका पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है। परमेश्वर की कलीसिया के चरवाहे बनो, जिसे उस ने अपने लोहू से मोल लिया है। मुझे पता है कि मेरे जाने के बाद, जंगली भेड़िये तुम्हारे बीच आएंगे और झुंड को नहीं छोड़ेंगे। यहां तक कि आपके अपने नंबर से भी लोग उठेंगे और शिष्यों को अपने पीछे खींचने के लिए सच्चाई को विकृत कर देंगे। तो अपने पहरे पर रहो! स्मरण रहे कि तीन वर्ष तक मैं ने तुम में से प्रत्येक को रात-दिन आंसुओं के साथ चेतावनी देना बंद नहीं किया (प्रेरितों के काम 20:28-31)।

जो कोई इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी के वचनों को सुनता है, मैं उन सभी को चेतावनी देता हूँ, कि यदि कोई उन में कुछ और बढ़ाए, तो परमेश्वर इस पुस्तक में वर्णित विपत्तियों को उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक से वचन दूर करे, तो परमेश्वर उस से जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में उसका भाग छीन लेगा, जिसका वर्णन इस पुस्तक में किया गया है (प्रकाशितवाक्य 22:18-19)।

कुल्हाड़ा तो पेड़ों की जड़ में है, और जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंक दिया जाएगा (मती 3:10)।

क्योंकि पापी प्रकृति वह चाहती है जो आत्मा के विपरीत है, और आत्मा जो पापी स्वभाव के विपरीत है। वे एक-दूसरे के साथ संघर्ष में हैं, ताकि आप वह न करें जो आप चाहते हैं। परन्तु यदि तुम आत्मा के द्वारा चलाए जाते हो, तो तुम व्यवस्था के अधीन नहीं हो (गलातियों 5:17-18)।

पापी प्रकृति के कार्य स्पष्ट हैं: यौन अनैतिकता, अशुद्धता और व्यभिचार; मूर्तिपूजा और जादू टोना; घृणा, कलह, ईर्ष्या, क्रोध के दौर, स्वार्थी महत्वाकांक्षा, मतभेद, गुट और ईर्ष्या; नशे, orgies, और इस तरह। जैसा मैं ने पहिले किया, वैसा ही मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ, कि जो लोग इस प्रकार जीते हैं वे परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे (गलातियों 5:19-21)।

कोई अशुद्ध वस्तु उस में कभी प्रवेश न करेगी, और न कोई जो लज्जाजनक या छल का काम करेगा, केवल वे ही जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं (प्रकाशितवाक्य 21:26-27)।

but only those whose names are written in the Lamb's book of life (Revelation 21:26-27).

#### To those Relying On Riches

"But woe to you who are rich, for you have already received your comfort. Woe to you who are well fed now, for you will go hungry. Woe to you who laugh now, for you will mourn and weep. Woe to you when all men speak well of you, for that is how their fathers treated the false prophets (Luke 6:24-26).

#### To Religious Leaders

Woe to you, blind guides! You say, 'If anyone swears by the temple, it means nothing; but if anyone swears by the gold of the temple, he is bound by his oath.' You blind fools! Which is greater: the gold, or the temple that makes the gold sacred? You also say, 'If anyone swears by the altar, it means nothing; but if anyone swears by the gift on it, he is bound by his oath.' You blind men! Which is greater: the gift, or the altar that makes the gift sacred? Therefore, he who swears by the altar swears by it and by everything on it. And he who swears by the temple swears by it and by the one who dwells in it. And he who swears by heaven swears by God's throne and by the one who sits on it (Matthew 23:16-22).

Woe to you, teachers of the law and Pharisees, you hypocrites! You travel over land and sea to win a single convert, and when he becomes one, you make him twice as much a son of hell as you are (Matthew 23:15).

"Woe to you, teachers of the law and Pharisees, you hypocrites! You clean the outside of the cup and dish, but inside they are full of greed and self-indulgence (Matthew 23:25).

Woe to you, teachers of the law and Pharisees, you hypocrites! You shut the kingdom of heaven in men's faces. You yourselves do not enter, nor will you let those enter who are trying to (Matthew 23:13).

Woe to you, teachers of the law and Pharisees, you hypocrites! You give a tenth of your spices - mint, dill and cumin. But you have neglected the more important matters of the law - justice, mercy and faithfulness. You should have practiced the latter, without neglecting the former. You blind guides! You strain out a gnat but swallow a camel (Matthew 23:23-24).

#### धन पर निर्भर लोगों के लिए

"परन्तु तुम पर हाय, जो धनी हैं, क्योंकि तुम ने शान्ति पा ली है। हाय तुम पर, जो अब पेट भरे हुए हैं, क्योंकि तुम भूखे रहोगे। हाय तुम पर जो अब हंसते हैं, क्योंकि तुम शोक और रोओगे। धिक्कार है तुम पर जब सब लोग तेरे विषय में अच्छा बोलते हैं, क्योंकि उनके पुरखा झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ ऐसा ही करते थे (लूका 6:24-26)।

#### धार्मिक नेताओं के लिए

तुम पर धिक्कार है, अंधे मार्गदर्शक! तुम कहते हो, 'यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए, तो उसका कोई अर्थ नहीं; परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की शपथ खाए, तो वह अपक्की शपथ से बंधा हुआ है।' तुम अंधे मूर्खों! कौन सा बड़ा है: सोना, या मंदिर जो सोने को पवित्र बनाता है? तुम यह भी कहते हो, 'यदि कोई वेदी की शपथ खाए, तो उसका कोई अर्थ नहीं; परन्तु यदि कोई उस भेंट की शपथ खाए, तो वह अपक्की शपथ से बंधा हुआ है।' तुम अंधे आदमी! कौन सा बड़ा है: उपहार, या वेदी जो उपहार को पवित्र बनाती है? इसलिए जो वेदी की शपथ खाता है, वह उस की और उस की सब वस्तुओं की भी शपथ खाता है। और जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह उसकी और उस में रहनेवाले की भी शपथ खाता है। और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन और उस पर बैठने वाले की भी शपथ खाता है (मती 23:16-22)।

हे कपटियों, व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों, तुम पर हाय! आप एक परिवर्तित व्यक्ति को जीतने के लिए भूमि और समुद्र में यात्रा करते हैं, और जब वह एक हो जाता है, तो आप उसे अपने से दुगना नरक का पुत्र बना देते हैं (मती 23:15)।

"हे कपटियों, व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम प्याले और थाली को बाहर से साफ करते हो, परन्तु भीतर से वे लोभ और भोग से भरे होते हैं (मती 23:25)।

हे कपटियों, व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों, तुम पर हाय! आपने स्वर्ग के राज्य को मनुष्यों के सामने बंद कर दिया। तुम आप ही प्रवेश नहीं करते, और न उन्हें प्रवेश करने देते हो जो कोशिश करते हैं (मती 23:13)।

हे कपटियों, व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों, तुम पर हाय! आप अपने मसालों का दसवां हिस्सा दें - पुदीना, सोआ और जीरा। लेकिन आपने कानून के अधिक महत्वपूर्ण मामलों - न्याय, दया और विश्वास की उपेक्षा की है। आपको पूर्व की उपेक्षा किए बिना, बाद वाले का अभ्यास करना चाहिए था। आप अंधे मार्गदर्शक! तुम मच्छर को तो छानते हो, परन्तु ऊँट को निगल जाते हो (मती 23:23-24)।

Woe to you, teachers of the law and Pharisees, you hypocrites! You are like whitewashed tombs, which look beautiful on the outside but on the inside are full of dead men's bones and everything unclean. In the same way, on the outside you appear to people as righteous but on the inside, you are full of hypocrisy and wickedness (Matthew 23:27-28).

Questions

- Who are the antichrists?
  - \_\_\_ The Devil and his angels
  - \_\_\_ Christians who returned to the world
  - \_\_\_ Those who deny that Christ is the Son of God
  - \_\_\_ Spirits
- It is acceptable for Christians to treat non-Christians with less respect,  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
- Some people, even those who profess to be Christians, will intentionally teach contrary to the Gospel and the Apostles' teachings.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
- Which of the following are sinful?
  - \_\_\_ sexual immorality
  - \_\_\_ impurity and debauchery
  - \_\_\_ idolatry and witchcraft
  - \_\_\_ hatred
  - \_\_\_ discord
  - \_\_\_ jealousy
  - \_\_\_ fits of rage
  - \_\_\_ selfish ambition
  - \_\_\_ dissensions
  - \_\_\_ actions and envy
  - \_\_\_ drunkenness
  - \_\_\_ orgies
  - \_\_\_ all the above
- Those who keep all God's commands but do not show mercy or justice are righteous.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_

### His Message

#### Lesson 7

In the beginning and for five days God spoke everything into existence concluding that it was good. On the sixth day "God said, "Let us make man in our image, in our likeness" (Genesis 1:26). So, They, God, created man, male and female, from the ground previously spoken into existence. Man was even able to talk to God.

हे कपटियों, व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम सफेदी की हुई कब्रों के समान हो, जो बाहर से तो सुंदर दिखती हैं, पर भीतर से मरे हुए आदमियों की हड्डियों और सब कुछ अशुद्ध से भरी हुई हैं। उसी तरह, बाहर से तुम लोगों को धर्मी लगते हो, परन्तु भीतर से तुम कपट और दुष्टता से भरे हुए हो (मत्ती 23:27-28)।

प्रश्न

- मसीह विरोधी कौन हैं?
 

एक। \_\_\_ शैतान और उसके दूत

बी। \_\_\_ ईसाई जो दुनिया में लौट आए

सी। \_\_\_ जो इस बात से इनकार करते हैं कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है

डी। \_\_\_ स्पिरिट्स
- ईसाइयों के लिए गैर-ईसाइयों के साथ कम सम्मान के साथ व्यवहार करना स्वीकार्य है,  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_
- कुछ लोग, यहाँ तक कि वे जो ई-ईसाइयों को मानते हैं, जानबूझकर सुसमाचार और प्रेरितों की शिक्षाओं के विपरीत शिक्षा देंगे।  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_
- निम्नलिखित में से कौन पापी हैं?
 

एक। \_\_\_ यौन अनैतिकता

बी। \_\_\_ अशुद्धता और व्यभिचार

सी। \_\_\_ मूर्तिपूजा और जादू टोना

डी। \_\_\_ घृणा

इ। \_\_\_ कलह

एफ। \_\_\_ डाह करना

जी। \_\_\_ क्रोध के फिट बैठता है

एच। \_\_\_ स्वार्थी महत्वाकांक्षा

मैं। \_\_\_ मतभेद

जे। \_\_\_ कार्य और ईर्ष्या

एल। \_\_\_ शराबीपन

एम। \_\_\_ संगठन

एन। \_\_\_ सब से ऊपर
- जो परमेश्वर की सारी आज्ञाओं को मानते हैं, परन्तु दया या न्याय नहीं दिखाते, वे धर्मी हैं।  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_

Man was given instructions to take care of the place God had placed him upon the earth. Man was told not to eat of the tree of the knowledge of good and evil.

But man separated himself from God when he rebelled by disobeying the only thing God told him not to do. This sin brought physical death and unless man could somehow be reconciled to God also a spiritual death. This reconciliation would require a blood sacrifice. Not just any sacrifice for "it is impossible for the blood of bulls and goats to take away sins" (Hebrews 10:4).

It would require someone who had no sin to be that perfect sacrifice. "You see, at just the right time, when we were still powerless, Christ died for the ungodly" (Romans 5:7).

Three apostles, Paul, Peter and John, wrote about Christ's sinlessness and sacrifice to take away sins of the world. "We implore you on Christ's behalf: Be reconciled to God. God made him who had no sin to be sin for us, so that in him we might become the righteousness of God." (2 Corinthians 5:20-21) "Christ suffered for you, leaving you an example, that you should follow in his steps. He committed no sin, and no deceit was found in his mouth" (1 Peter 2:21-22). "But you know that he appeared so that he might take away our sins. And in him is no sin" (1 John 3:5).

John the Baptist was "A voice of one calling in the desert, 'Prepare the way for the Lord, make straight paths for him'" (Matthew 3:3). He said "I baptize you with water for repentance. But after me will come one who is more powerful than I, whose sandals I am not fit to carry. He will baptize you with the Holy Spirit and with fire. His winnowing fork is in his hand, and he will clear his threshing floor, gathering his wheat into the barn and burning up the chaff with unquenchable fire" (Matthew 3:11-12).

Following His baptism by John to fulfill all righteousness and overcoming the temptations put before Him by Satan, Jesus returned to Galilee and then went to Nazareth. In their synagogue He took a scroll and "Unrolling it, he found the place where it is written: 'The Spirit of the Lord is on me, because he has anointed me to preach good news to the poor. He has sent me to proclaim freedom for the prisoners and recovery of sight for the blind, to release the

## उनका संदेश

पाठ 7

शुरुआत में और पांच दिनों के लिए भगवान ने सब कुछ अस्तित्व में बताया और निष्कर्ष निकाला कि यह अच्छा था। छठे दिन "परमेश्वर ने कहा, "आओ, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं" (उत्पत्ति 1:26)। इसलिए, परमेश्वर ने मनुष्य, नर और नारी को उस भूमि से उत्पन्न किया, जो पहले से अस्तित्व में थी। मनुष्य परमेश्वर से बात करने में भी सक्षम था। मनुष्य को निर्देश दिया गया था कि वह उस स्थान की देखभाल करे जहां परमेश्वर ने उसे पृथ्वी पर रखा था। मनुष्य से कहा गया था कि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाए।

लेकिन मनुष्य ने स्वयं को परमेश्वर से अलग कर लिया जब उसने केवल एक चीज की अवज्ञा करके विद्रोह किया जिसे परमेश्वर ने उसे नहीं करने के लिए कहा था। यह पाप शारीरिक मृत्यु लेकर आया और जब तक मनुष्य किसी तरह से परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप नहीं कर पाता, वह भी आध्यात्मिक मृत्यु। इस सुलह के लिए एक रक्त बलिदान की आवश्यकता होगी। केवल "यह अनहोना है कि बैल और बकरियों का लोहू पापों को दूर करे" (इब्रानियों 10:4) के लिए कोई बलिदान नहीं।

इसके लिए किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होगी जिसके पास कोई पाप न हो, वह पूर्ण बलिदान हो। "तुम देखते हो, ठीक समय पर, जब हम शक्तिहीन थे, तो मसीह अधर्मियों के लिए मर गया" (रोमियों 5:7)।

तीन प्रेरितों, पौलुस, पतरस और यूहन्ना ने मसीह की पापरहितता और संसार के पापों को दूर करने के बलिदान के बारे में लिखा। "हम मसीह की ओर से आपसे विनती करते हैं: भगवान से मेल मिलाप करें। जिस में कोई पाप नहीं था, उसे परमेश्वर ने हमारे लिये पापी ठहराया, कि उस में हम परमेश्वर की धार्मिकता ठहरें।" (2 कुरिन्थियों 5:20-21) "मसीह ने तुम्हारे लिए दुख उठाया, और तुम्हारे लिए एक आदर्श छोड़ दिया, कि तुम उसके चरणों में चलो। उस ने कोई पाप नहीं किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली" (1 पतरस 2:21-22)। "पर तुम जानते हो, कि वह हमारे पापों को दूर करने के लिये प्रकट हुआ। और उस में कोई पाप नहीं" (1 यूहन्ना 3:5)।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था "जंगल में एक पुकारने वाले की आवाज, 'प्रभु के लिए मार्ग तैयार करो, उसके लिए सीधे मार्ग बनाओ'" (मत्ती 3:3)। उसने कहा, "मैं तुम्हें मन फिराव के लिये जल से बपतिस्मा देता हूँ। परन्तु मेरे बाद एक ऐसा आएगा जो मुझ से अधिक सामर्थी है, जिसकी जूती उठाने के योग्य मैं नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका जीतने वाला कांटा अंदर है। अपना हाथ, और वह अपने खलिहान को साफ करेगा, अपने गेहूँ को खलिहान में इकट्ठा करेगा, और भूसी को आग से जला देगा"

oppressed, to proclaim the year of the Lord's favor.' Then he rolled up the scroll, gave it back to the attendant and sat down. The eyes of everyone in the synagogue were fastened on him, and he began by saying to them, 'Today this scripture is fulfilled in your hearing' (Luke 4:17-21).

So what is this "good news to the poor" He preached? It was and still is – God became flesh and blood like all other human beings. He was born of woman but conceived by an act of the Holy Spirit not by man. "He grew in wisdom and stature, and in favor with God and men" and stated "I must be about My Father's business" (Luke 2:49 NKJV and Luke 2:52 NIV) The business of the Father was to bring all men back into a righteous relationship with Them before sin entered the world. To do this a perfect sacrifice must be made and man must change from a life of self-seeking and rebellion to one of trust, obedience and reverence in the one who could forgive their sins and give eternal life. Jesus said "I am the way and the truth and the life. No one comes to the Father except through me" (John 14:6-7). Jesus came to them and said, "All authority in heaven and on earth has been given to me. Therefore, go and make disciples of all nations, baptizing them in the name of the Father and of the Son and of the Holy Spirit, and teaching them to obey everything I have commanded you. And surely I am with you always, to the very end of the age" (Matthew 28:18-20). Proof of all this was in prophecies fulfilled, miracles witnessed and acknowledgement by enemies and ultimately in His public death and burial and His resurrection witnessed by hundreds of His disciples.

Since He is the Way, the Truth and The Life and since He has all authority in heaven and on earth and since no one could come to the Father except through Him, then what is required of us to have our sins forgiven, being reconciled, and saved? Or as the Jews said on Pentecost Day "When the people heard this, they were cut to the heart and said to Peter and the other apostles, "Brothers, what shall we do" (Acts 2:37)?

### Hear

- Study diligently and read what the Christ preached for they are the Words of life.

### Understand

- All men are sinful having disobeyed God's commands

(मत्ती 3:11-12)।

सभी धार्मिकता को पूरा करने के लिए यूहन्ना द्वारा अपने बपतिस्मा के बाद और शैतान द्वारा उसके सामने रखे गए प्रलोभनों पर काबू पाने के बाद, यीशु गलील लौट आया और फिर नासरत चला गया। उस ने उनके आराधनालय में एक पुस्तक ली, और उसे खोलकर वह स्थान पाया, जहां लिखा है, कि यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उस ने कंगालोंको सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे बन्दियों की स्वतन्त्रता और अंधों की दृष्टि की बहाली का प्रचार करने, शोषितों को छुड़ाने, और यहोवा के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करने के लिये भेजा है। तब उस ने पुस्तक को लुढ़काकर सेवक को लौटा दिया और बैठ गया। आराधनालय में सबकी निगाहें उस पर लगी रहीं, और वह उन से कहने लगा, 'आज यह वचन तुम्हारे सुनने में पूरा हुआ' (लूका 4:17-21)।

तो यह "गरीबों के लिए खुशखबरी" क्या है जिसका उसने प्रचार किया? यह था और अब भी है - भगवान अन्य सभी मनुष्यों की तरह मांस और रक्त बन गए। वह स्त्री से पैदा हुआ था, लेकिन पवित्र आत्मा के एक कार्य द्वारा गर्भ धारण किया था, पुरुष द्वारा नहीं। "वह बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया" और कहा, "मुझे अपने पिता का काम होना चाहिए" (लूका 2:49 NKJV और लूका 2:52 NIV) पिता का काम सभी पुरुषों को लाना था पाप के दुनिया में प्रवेश करने से पहले उनके साथ एक धर्मी संबंध में वापस। ऐसा करने के लिए एक पूर्ण बलिदान किया जाना चाहिए और मनुष्य को आत्म-खोज और विद्रोह के जीवन से उस व्यक्ति में विश्वास, आज्ञाकारिता और श्रद्धा में बदलना चाहिए जो अपने पापों को क्षमा कर सकता है और अनंत जीवन दे सकता है। यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:6-7)। यीशु उनके पास आया और कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाकर सब जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो कुछ मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है उसका पालन करना सिखाओ। और मैं युग के अन्त तक सदा तेरे संग रहूंगा" (मत्ती 28:18-20)। इन सबका प्रमाण भविष्यवाणियों की पूर्ति, शत्रुओं द्वारा देखे गए चमत्कार और स्वीकृति और अंततः उनकी सार्वजनिक मृत्यु और दफन और उनके सैकड़ों शिष्यों द्वारा उनके पुनरुत्थान में देखा गया था।

चूँकि वह मार्ग, सत्य और जीवन है, और स्वर्ग और पृथ्वी पर उसका सारा अधिकार है, और उसके बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता है, तो हमें अपने पापों को क्षमा करने की आवश्यकता है, मेल-मिलाप करना, और बचाया? या जैसा कि पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों ने कहा था, "जब लोगों ने यह सुना, तो उनका मन कट गया और उन्होंने पतरस और दूसरे प्रेरितों से

- I have sinned and am not living according to God's commands
- My sin will result in my eternal death
- I must be forgiven to have eternal life with God
- Christ is the only way for me to be forgiven of all my sins

#### Believe Jesus

- Was and is God
- Came to earth in flesh as Jesus of Nazareth
- Lived among men
- Willingly gave His physical life as the perfect sacrifice for my sins, being crucified
- Was buried
- Rose from the grave on the third day
- Appeared to hundreds of his disciples following His resurrection
- Ascended back to heaven to be with the Father

#### Repent

- Change my life from sin and disobedience to trust and obedience

#### Confess

- Acknowledge publicly my belief that Jesus is the Son of God.

#### Die

- Put to death my old, sinful, worldly life

#### Seek

- Call upon God to forgive me of my sins

#### Bury

- Bury my sinful life I put to death in the grave of baptism in water (immersion) into the death, burial and resurrection of Christ allowing God to raise me from the grave as a new Creation.

#### Receive

- The Holy Spirit as a deposit guaranteeing what is to come

#### Become

- A new Christian as God will add me as His adopted child to the other children into the Church Christ established

कहा, हे भाइयो, हम क्या करें" (प्रेरितों के काम 2:37)?

#### सुनना

- लगन से अध्ययन करो और पढ़ो कि मसीह ने क्या उपदेश दिया क्योंकि वे जीवन के वचन हैं।

#### समझना

- परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके सभी मनुष्य पापी हैं
- मैंने पाप किया है और परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार नहीं जी रहा हूँ
- मेरे पाप का परिणाम मेरी अनन्त मृत्यु में होगा
- मुझे परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन पाने के लिए क्षमा किया जाना चाहिए
- मेरे लिए मेरे सभी पापों को क्षमा करने का एकमात्र तरीका मसीह है

#### यीशु पर विश्वास करें

- भगवान था और है
- नासरत के यीशु के रूप में मांस में पृथ्वी पर आया
- पुरुषों के बीच रहता था
- स्वेच्छा से अपने भौतिक जीवन को मेरे पापों के लिए पूर्ण बलिदान के रूप में दे दिया, क्रूस पर चढ़ाया गया
- दफनाया गया
- तीसरे दिन कब्र से गुलाब
- उनके पुनरुत्थान के बाद उनके सैकड़ों शिष्यों को दिखाई दिए
- पिता के साथ रहने के लिए वापस स्वर्ग में चढ़े

#### मन फिराओ

- मेरे जीवन को पाप और अवज्ञा से विश्वास और आज्ञाकारिता में बदलें

#### अपराध स्वीकार करना

- सार्वजनिक रूप से मेरे विश्वास को स्वीकार करें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

#### मरना

- मेरे पुराने, पापी, सांसारिक जीवन को मार डालो

#### पाना

- मेरे पापों को क्षमा करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें

#### दफनाना

- मेरे पापी जीवन को दफनाने के लिए मैंने पानी (विसर्जन) में बपतिस्मा की कब्र में मृत्यु, दफन और मसीह के पुनरुत्थान में डाल दिया, जिससे भगवान मुझे एक नई रचना के रूप में कब्र से उठा सके।

#### प्राप्त करना

## Live

- Continue to live steadfastly and obediently to Christ and the apostles teachings "I urge you to live a life worthy of the calling you have received. Be completely humble and gentle; be patient, bearing with one another in love. Make every effort to keep the unity of the Spirit through the bond of peace" (Ephesians 4:1-3.)

## Questions

1. Reconciliation to God requires the blood sacrifice of someone who had no sin.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
2. There are many ways to get to heaven, since one religion is as good as another.  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
3. One of the last things Jesus said was "All authority in heaven and on earth has been given to me. Therefore, go and make disciples of all nations, baptizing them in the name of the Father and of the Son and of the Holy Spirit, and teaching them to obey everything I have commanded you"  
T. \_\_\_\_\_ F. \_\_\_\_\_
4. What is the message of Christ?
  - a. \_\_\_\_\_ He left Heaven to come to earth as a man.
  - b. \_\_\_\_\_ In the judgment He will forgive everyone's sins
  - c. \_\_\_\_\_ He gave His life as the sacrifice for man's sins
  - d. \_\_\_\_\_ He is the God of Love desiring everyone come to Him
  - e. \_\_\_\_\_ God raised Him from the grave
  - f. \_\_\_\_\_ Those who obey His commands and put their trust in Him will be saved
  - g. \_\_\_\_\_ a, b, d and e.
  - h. \_\_\_\_\_ b and d.
  - i. \_\_\_\_\_ a, c, e and f.
  - j. \_\_\_\_\_ a, c, d, e and f.
5. What must one do to be saved?
  - a. \_\_\_\_\_ Understand the message of Christ
  - b. \_\_\_\_\_ Believe and confess Jesus is God who gave His life as the sacrifice required for sins to be forgiven
  - c. \_\_\_\_\_ Change one's way of life
  - d. \_\_\_\_\_ Die to life of sin, be buried in

- जमा राशि के रूप में पवित्र आत्मा आने वाले समय की गारंटी देता है

## बनना

- भगवान के रूप में एक नया ईसाई मुझे अपने दत्तक बच्चे के रूप में जोड़ देगा  
चर्च क्राइस्ट में अन्य बच्चों की स्थापना

## रहना

- मसीह के प्रति दृढ़ता और आज्ञाकारिता से जीना जारी रखें और प्रेरितों की शिक्षाएं "मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप एक ऐसा जीवन जिएं जो आपको प्राप्त हुई बुलाहट के योग्य हो। पूरी तरह से विनम्र और कोमल बनो; सब्र रखो, प्रेम से एक दूसरे की सह लो। मेल के बन्धन के द्वारा आत्मा की एकता को बनाए रखने का भरसक प्रयत्न करो" (इफिसियों 4:1-3)

## प्रश्न

1. परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप के लिए किसी ऐसे व्यक्ति के रक्त बलिदान की आवश्यकता होती है जिसमें कोई पाप नहीं था।  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_
2. स्वर्ग जाने के कई रास्ते हैं, क्योंकि एक धर्म दूसरे धर्म जितना ही अच्छा है।  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_
3. यीशु ने जो आखिरी बातें कही थीं उनमें से एक थी, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाकर सब जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र के नाम से बपतिस्मा दो। आत्मा, और उन्हें सब कुछ जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ"  
टी. \_\_\_\_\_ एफ. \_\_\_\_\_
4. मसीह का संदेश क्या है?
  - एक। \_\_\_\_\_ उसने मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आने के लिए स्वर्ग छोड़ दिया।
  - बी। \_\_\_\_\_ न्याय में वह सबके पापों को क्षमा करेगा
  - सी। \_\_\_\_\_ उसने अपना जीवन मनुष्य के पापों के लिए बलिदान के रूप में दिया
  - डी। \_\_\_\_\_ वह प्रेम का देवता है जो चाहता है कि हर कोई उसके पास आए
  - इ। \_\_\_\_\_ भगवान ने उसे कब्र से उठाया
  - एफ। \_\_\_\_\_ जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और उस पर

water and be raised a new, spiritual, creation receiving the Holy Spirit.

- e. \_\_\_ Live steadfastly in prayer and Apostles teachings  
f. \_\_\_ All the above  
g. \_\_\_ a, b and e  
h. \_\_\_ b and e.  
i. \_\_\_ a, b. and d

#### Conclusion

The Holy Spirit, by preserving the Bible, has made us indirect witnesses or observers of these miracles. Will we refuse to acknowledge Him like the Scribes and Pharisees or will we praise God for the opportunity to be forgiven of our sins by trusting in Him and obeying His commands? The decision is ours as to where we will spend eternity.

भरोसा रखते हैं, वे बच जाएंगे

जी। \_\_\_ ए, बी, डी और ई।

एच। \_\_\_ बी और डी।

मैं। \_\_\_ ए, सी, ई और एफ।

जे। \_\_\_ ए, सी, डी, ई और एफ।

#### 5. उद्धार पाने के लिए व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

एक। \_\_\_ मसीह के संदेश को समझे

बी। \_\_\_ विश्वास करें और स्वीकार करें कि यीशु ही परमेश्वर हैं जिसने पापों को क्षमा करने के लिए आवश्यक बलिदान के रूप में अपना जीवन दिया

सी। \_\_\_ अपने जीवन का तरीका बदले

डी। \_\_\_ पाप के जीवन के लिए मरो, पानी में दफन हो जाओ और पवित्र आत्मा को प्राप्त करने वाली एक नई, आध्यात्मिक, सृष्टि बनो।

इ। \_\_\_ प्रार्थना और प्रेरितों की शिक्षाओं में स्थिर रहें

एफ। \_\_\_ सब से ऊपर

जी। \_\_\_ ए, बी और ई

एच। \_\_\_ बी और ई।

मैं। \_\_\_ ए, बी। और डी

#### निष्कर्ष

पवित्र आत्मा ने, बाइबल को संरक्षित करके, हमें इन चमत्कारों का अप्रत्यक्ष गवाह या पर्यवेक्षक बनाया है। क्या हम उसे शास्त्रियों और फरीसियों की तरह स्वीकार करने से इंकार करेंगे या क्या हम परमेश्वर पर भरोसा करने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा हमारे पापों को क्षमा करने के अवसर के लिए उसकी स्तुति करेंगे? निर्णय हमारा है कि हम अनंत काल कहाँ बिताएँगे।

# International Bible Knowledge Institute - अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान

## Electives Studies - वैकल्पिक अध्ययन

Mortal Man From Life to Death - नश्वर मनुष्य जीवन से मृत्यु तक

Planned Redemption - नियोजित मोचन

Creation before Genesis - उत्पत्ति से पहले का निर्माण

What Shall We Do? हम क्या करें?

End of Time on Earth - पृथ्वी पर समय का अंत

Marriage and Divorce - विवाह और तलाक

Silence of the Scriptures - शास्त्रों की चुप्पी

Daniel - डैनियल

First Principles of Christ - मसीह के पहले सिद्धांत

Holy Spirit - पवित्र आत्मा

Types and Metaphors - पवित्र आत्मा

## Additional Studies - वैकल्पिक अध्ययन

Today's Church Practices - वैकल्पिक अध्ययन

Compiling and Translating the Bible - बाइबल का संकलन और अनुवाद

Shadows, Types and Prophecies - छाया, प्रकार और भविष्यवाणियां

Teachings & Practices after AD 100 - 100 ईस्वी के बाद की शिक्षाएं और व्यवहार

God's Sabbath - भगवान का सבת

Promises Now and For Evermore - वादे अभी और हमेशा के लिए

God's Rebuilding Process - भगवान की पुनर्निर्माण प्रक्रिया

Living The Maximum Life - अधिकतम जीवन जीना

Real Men are Godly Men - सच्चे पुरुष ईश्वरीय पुरुष हैं

Living For One Another - एक दूसरे के लिए जीना

Greatest Questions Ever Asked - अब तक के सबसे बड़े सवाल

Wonderful Words Of Life - जीवन के अद्भुत शब्द

Lessons From The Cross - क्रॉस से सबक

Jehovah's Witnesses church - यहोवा के साक्षी चर्च

Interesting but not required for BKS award - दिलचस्प है लेकिन बीकेएस पुरस्कार के लिए आवश्यक नहीं

**Outlined Bible** - उल्लिखित बाइबिल

**Summarized** - सारांशित बाइबिल

---

LESSONS AND SERVICES PROVIDED BY *INTERNATIONAL BIBLE KNOWLEDGE INSTITUTE* ARE FREE OF CHARGE.  
YOU WILL NEVER BE ASK FOR TUITION OR ANY OTHER FEE. *IBKI* IS NOT AN ACCREDITED INSTITUTION.

अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले पाठ और सेवाएं निःशुल्क हैं। आपसे कभी भी ट्यूशन या कोई अन्य शुल्क नहीं मांगा जाएगा। आईबीकेआई एक मान्यता प्राप्त संस्थान नहीं है।

International Bible Knowledge Institute  
Randolph Dunn, President  
Roberto Santiago, Dean



अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान  
S.M.Vinay Kumar,  
IBKI India Director

संस्थान का लक्ष्य परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति को बाइबल पाठ उपलब्ध कराना है। पाठों को प्रिंट करने के लिए डाउनलोड किया जा सकता है, ऑनलाइन अध्ययन किया जा सकता है या व्यक्तियों या चर्चों द्वारा ईमेल मंत्रालय में उपयोग किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान (IBKI) से डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए एक छात्र ने चार आवश्यक पाठ्यक्रम और 7 वैकल्पिक पाठ पूरे किए होंगे।

उन्नत अध्ययन "बीकेएस" (बाइबल नॉलेज स्कॉलर) पुरस्कार प्राप्त करने के लिए, एक डिप्लोमा अर्जित करने के अलावा एक छात्र ने सभी वैकल्पिक पाठ और 7 अतिरिक्त अध्ययन पूरे कर लिए होंगे।

आईबीकेआई गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए पुस्तकों और पाठों को उनकी संपूर्णता में बिना किसी परिवर्तन या शुल्क के पुनः पेश करने की अनुमति देता है।

### Course One - The Message | कोर्स एक - संदेश

How Did Everything Get Here? सब कुछ यहाँ कैसे आया?

The Man Who Was God वह आदमी जो भगवान था

Christ - God's Mystery क्राइस्ट - भगवान का रहस्य

Myths About God भगवान के बारे में मिथक

### Course Two - Obedience To His Message | पाठ्यक्रम दो - उनके संदेश की आज्ञाकारिता

Time Before Christ मसीह से पहले का समय

Time Christ on the Earth पृथ्वी पर समय मसीह

Time After Christ मसीह के बाद का समय

Time to Decide तय करने का समय

From Death Through The Cross To Life मृत्यु से क्रूस के द्वारा जीवन की

### Course Three - A New Spiritual Life In Christ | कोर्स तीन - मसीह में एक नया आध्यात्मिक जीवन

Baptism into Christ मसीह में बपतिस्मा

Life to Death - The Mortal Life

A Kingdom Not Made With Hands हाथों से नहीं बना साम्राज्य

Servants In The Kingdom राज्य में सेवक

Message From The Epistles पत्रियों से संदेश

Worship God In Spirit and Truth आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करें

### Course Four - Maturing In Christ | कोर्स चार - मसीह में परिपक्व होना

Jesus of Nazareth नासरत का यीशु

Life Of Christ मसीह का जीवन

United in Christ में संयुक्त

Spiritual Milk आध्यात्मिक दूध

Body, Soul, Spirit - Where Do They Go When You Die? शरीर, आत्मा, आत्मा - जब आप मरते हैं तो वे कहाँ जाते हैं?

Living Liberated लिविंग लिबरेटेड

Revelation Of Jesus Christ यीशु मसीह का रहस्योद्घाटन

कृपया इस कार्यक्रम और पाठों के बारे में सभी प्रश्नों को इस पते पर अपने नामित शिक्षक को निर्देशित करें।

Distributed by

Hyderabad & Naidupet Church of Christ,

1-2-168, CBN Colony, Helping Hands Trust,

Naidupet-524 126, A.P,India